बीएड – 105

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

Reading and Reflecting on Texts

मूल पाठों का पठन एवं मीमांसा

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

संरक्षक	अध्यक्ष
प्रो. अशोक शर्मा	**प्रो. एल.आर. गुर्जर**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक एवं सदस्य

** संयोजक	* संयोजक
डॉ. अनिल कुमार जैन	**डॉ. रजनी रंजन सिंह**
सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ	सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

प्रो. (डॉ) एल.आर. गुर्जर निदेशक (अकादमिक) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**प्रो. जे. के. जोशी** निदेशक, शिक्षा विद्या शाखा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
प्रो. दिव्य प्रभा नागर पूर्व कुलपति ज.रा. नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर	**प्रो. दामीना चौधरी (सेवानिवृत्त)** शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
प्रो. अनिल शुक्ला आचार्य शिक्षा , लखनऊ **विश्वविद्यालय**, लखनऊ	**डॉ. रजनी रंजन सिंह** सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ. अनिल कुमार जैन सह आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**डॉ. कीर्ति सिंह** सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ. पतंजलि मिश्र सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**डॉ. अखिलेश कुमार** सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

*डॉ. रजनी रंजन सिंह ,सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ 13.06.2015 तक

**डॉ. अनिल कुमार जैन ,सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ14 .06.2015 से निरन्तर

समन्वयक एवं सम्पादक

समन्वयक (बी.एड.)
डॉ. कीर्ति सिंह
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

लेखन एवं संपादन
डॉ. कीर्ति सिंह
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

आभार

प्रो विनय कुमार पाठक .
पूर्व कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. अशोक शर्मा
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा

प्रो .एल.आर .गुर्जर
निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा

प्रो. करण सिंह
निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा

डॉ. सुबोध कुमार
अतिरिक्त निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा

उत्पादन 2015, ISBN : 978-81-8496-525 -4

इस सामग्री के किसी भी अंश को व.म.खु.वि.वि., कोटा, की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। व.म.खु.वि.वि., कोटा के लिए कुलसचिव, व.म.खु.वि.वि., कोटा (राजस्थान) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पेज नं .
1	प्रस्तावना	1
2	पाठ्यक्रम विस्तृत वर्णन एवं उसके उद्देश्य	3
3	प्रतिदर्शन प्रतिबिम्बन का अर्थ एवं अन्य विस्तृत जानकारी/परावर्तन/	4
4	विभिन्न प्रकार के पाठ	25
5	छात्रों के लिए दिशा निर्देश-	30
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	32

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठकों से आग्रह

प्रिय पाठकों,

शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2009 एवं 2010 में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए दी गई अनुशंसाओं के क्रम में एनसीटीई द्वारा 2014 में तैयार किये गये पाठ्यक्रम की अनुपालना में विश्वविद्यालय ने अपनी विद्या परिषद् की स्वीकृति के पश्चात अन्तिम रूप में बने बी.एड. (ओडीएल) पाठ्यक्रम के अनुसार प्रथम वर्ष की स्व-अधिगम सामग्री (SLM) तैयार की है। यह पाठ्यसामग्री विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के सदस्यों और विश्वविद्यालय से जुड़े हुए अन्य शिक्षाविदों के अथक प्रयास से तैयार की गई है। यह एनसीटीई द्वारा 2014 में सुझाये गये नये पाठ्यक्रम के प्रकाश में किया गया प्रथम प्रयास है। आप प्रबुद्ध पाठक हैं। आपको इस SLM के किसी विषय, उप विषय, बिन्दु या किसी भी प्रकार की त्रुटि दिखाई पड़ती है या इसके परिवर्द्धन हेतु आप कोई सुझाव देना चाहते हैं तो शिक्षा विद्यापीठ सहर्ष आपके सुझावों को अगले संस्करण में सम्मिलित करने का प्रयास करेगा। आप अपने सुझाव हमें निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा रावतभाटा रोड, कोटा - 324010 या मेल soe@vmou.ac.in पर भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद

(डॉ. अनिल कुमार जैन)
निदेशक
शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

इकाई - 1

प्रस्तावना

किसी ने सही कहा है कि ,''बच्चा जिस भाषा में रोता है वही उसकी भाषा कहलाती है।'' जब भाषा की बात आती है तब स्वाभाविक तौर पर उससे जुडी हर बात भावुकता से जुड जाती है। सेपिर के अनुसार, ''मानवीय विचारो एवम भावनाओ को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनिरुप व्यवस्था को भाषा कहते है।''अर्थात मनुष्य की दो अनमोल विरासत वैचारिक समृध्धि एवम मानवीय संवेदना का स्वरुप कही जाने वाली भावनाओ की प्रतीकात्मक व्यवस्था। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि भाषा मानवीय भावनाओ एवम विचारो की द्योत्तक है। भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आंतरिक एवं बाह्य सृष्टि के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा-वैज्ञानिकों के अनुसार ''भाषा या दृच्छिक वाचिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परम्पराओं एवं विचारों का आदान-प्रदान करता है।''

हम व्यवहार में यह देखते हैं कि भाषा का सम्बन्ध एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व-सृष्टि तक है। व्यक्ति और समाज के बीच व्यवहार में आने वाली इस परम्परा से अर्जित सम्पत्ति के अनेक रूप हैं। समाज सापेक्षता भाषा के लिए अनिवार्य है, ठीक वैसे ही जैसे व्यक्ति सापेक्षता। और भाषा संकेतात्मक होती है अर्थात् वह एक 'प्रतीक-स्थिति' है। इसकी प्रतीकात्मक गतिविधि के चार प्रमुख संयोजक हैः दो व्यक्ति – एक वह जो संबोधित करता है, दूसरा वह जिसे संबोधित किया जाता है, तीसरी सांकेतिक वस्तु और चौथी – प्रतीकात्मक संवाहक जो सांकेतिक वस्तु की ओर प्रतिनिधि भंगिमा के साथ संकेत करता है।

मानवीय सभ्यता की कई धरोहरो की तरह भाषा भी एक धरोहर है। वह उस सभ्यता की पहचान है और उस सभ्यता का एक अनूठा स्वरुप भी। एक पूरी समाजव्यव्स्था भाषा के माध्यम से ही व्यक्त होती है। कई मानव सभ्यताओं के बारे में हमे भाषा के माध्यम से ही जानकारी मिलती है।अपनी उत्पत्ति के साथ मानव ने सभ्यता और संस्कृति के विकास-सोपान के साथ भाषा के विकास की परम्परा भी अपनाए रखी। भाषा-विकास-परम्परा में सरलीकरण की प्रक्रिया इसी बात को इंगित करती है कि मानव-समुदाय भाषागत व्याकरणिक बन्धनों में जकड़ा नहीं रह सकता क्योंकि भाषा मनुष्य के हृदय की वस्तु नहीं अपितु आह्लाद, अनुभवों व भावों को व्यक्त करने वाली होती है। यही नहीं भाषा के द्वारा संस्कृति, संस्कार व राष्ट्र का निर्माण भी होता है। भाषा के द्वारा जहाँ एक ओर राजनीतिक संकल्पना की पूर्ति सम्पन्न होती है, वहीं दूसरी ओर समाज, व्यक्ति और विचार को आमूल-चूल परिवर्तित कर देने की प्रचण्ड शक्ति भी होती है। देखा जाये तो जहाँ एक ओर भाषा क्रांति का बीज साबित होती है वहीं दूसरी ओर शांति का मंत्र भी सिद्ध होती है। भाषा के द्वारा खण्डित एवं टूटे हुये दिलों को जहाँ एक ओर जोड़ा जा सकता है वहीं दूसरी ओर इसके रसायन से दिलों को तोड़ा भी जा सकता है। यही नहीं भाषा संवेदना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम् है।

अभिव्यक्ति या सम्पर्क के लिये एक मात्र सशक्त माध्यम भाषा ही है। भाषा का यह माध्यम तब और अधिक लोकप्रिय हो जाता है जब अधिक से अधिक लोग सर्वसम्मत एवं प्रचलन के रूप में उसे प्रयोग में लाते हों। भाषा का यह रूप 'लिंक लैंग्वेज' अर्थात सम्पर्क भाषा के रूप में जाना जाता है। कोई भी राष्ट्र राजनीतिक, व्यावहारिक दृष्टि से बिना सम्पर्क भाषा के विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता है। संस्कृति, संस्कार तथा व्यावहारिक दृष्टि से भी सम्यक भाषा ही जनता के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है।

भाषाई सम्प्रेषण के दो माध्यम होते हैं- मौखिक और लिखित | सम्प्रेषण में भाषा का मौखिक रूप ही प्राथमिक है | सुनना (श्रवण), बोलना (मौखिक अभिव्यक्ति), पढ़ना (पठन) तथा लिखना (लेखन) भाषा के कौशल माने जाते हैं | इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र-अध्यापक होने की दृष्टि से पठन एवं लेखन किस प्रकार किया जाना चाहिये , इस पर हम विस्तार से चर्चा करेंगे |

पठन कौशल अपने आप में अर्थ ग्रहण का कौशल माना जाता है | अत: इस पर सबसे आधिक ध्यान दिया जाता है क्योंकि सभी विषयों का अवबोधन भी ऐसी कौशल पर आधारित होता है | किसी लिखित पाठ्य-वस्तु का इसी प्रकार से प्रत्यक्षीकरण करना कि उसकी सामग्री का अवबोधन हो सके | यह एक प्रकार से पठन का रूप माना गया है | इसी प्रकार से भाषा विशेष में स्वीकृत लिपि प्रतीकों के माध्यम से भावो-विचारों को अंकित करने की कुशलता को लेखन कौशल कहा जाता है | अब तक पठन एवं लेखन कौशल के बारे में बात कर चुके हैं कि किस प्रकार से अभिव्यक्ति के लिए पठन व लेखन महत्वपूर्ण है | विचारमग्न अथवा प्रतिबिम्बन पठन और लेखन में एक आवश्यक स्थान रखता है | आगे इकाई 3 में इसके अर्थ और इसे किस प्रकार से किया जाता है, हम विस्तार से जानेगें |

इकाई - 2

पाठ्यक्रम का वर्णन एवं उसके उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का विचार NCFTE 2009 की देन है और उसी के आधार पर इसके उद्देश्यों की रचना हुई है | उसी के अनुसार इस पाठ्यक्रम और उदेश्यों का निर्माण किया गया है | शोध और लेखों के माध्यम से यह पता चला कि हमारे विश्वविद्यालयों के पूर्व स्नातक एवं स्नातक विद्यार्थीअनिच्छुक पाठक और विभिन्न क्षेत्रों में लिखने के लिए संघर्ष करते हैं | यह पाठ्यक्रम एक आधार की तरह है जो छात्र-अध्यापक को पढ़ने और भिन्न-भिन्न प्रकार के पाठ को पढकर अपनी प्रतिक्रिया अलग तरह से दे सके और एक साथ सोचने का विवेक दे सके | उसकी प्रतिक्रिया व्यक्तिगत,सृजनात्मक,आलोचनात्मक या इनका मिश्रण भी हो सकती है | वह अपनी मेटा-अनुभूति का विकास इसके माध्यम से कर सकते हैं | पठन में सहभागी रहकर वह अपनी पाठक और लेखन की योग्यता का विकास कर सकते हैं | भाषा जो कि सम्प्रेषण का माध्यम है किस प्रकार से व्हिन्न विभिन्न विषयों में अपनी अलग भूमिका रखती है | प्रत्येक विषय की अनपी एक अलग भाषा होती है | उसे किस प्रकार से पढ़ा, समझा और लिखा जाए, यही इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है | इसमें जिस विषय या पाठ को आप पढ़ रहे हैं उसमें प्रश्नों का निर्माण और उस विषय या पाठ को आप जिस भूमिका को साथ लेकर पढ़ रहे हैं और अपने खुद के अनुभव के आधार पर समझना है |पठन के द्वारा , अपने विषय या पाठ से संबंधित अपने तर्क और निष्कर्ष, सृजनशील विचारों का निर्माण करना , ओचित्य के साथ प्रस्तुत करना इस का ध्येय है | विभिन्न प्रकार के पाठ जैसे-पोलिसी-दस्तावेज़,ऐतिहासिक,विद्यालय से संबंधित लेख, शिक्षण संबंधित लेख, अन्य व्यक्तियों से प्राप्त अनुभव और अन्य प्रकार के पाठो को पढ़ने का अवसर प्रदान करना | इससे उनके पठन व लेखन कौशल का विकास होगा | वह विभिन्न प्रकार से पाठो का विश्लेषण कर सकेंगे |इसे आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा |

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय ने NCFTE 2009 की इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया है | आपसे अपेक्षा की जाती है कि उपरोक्त उदेश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम को पढेगें और कार्य करेंगे | साथ ही अपने छात्रों को भी सहभागी पाठक बनाने का प्रयत्न करेंगे |

इकाई - 3

प्रतिदर्शन/विचार का अर्थ एवं अन्य विस्तृत जानकारी

"Reading without reflecting is like eating without digesting."

-Edmund Burker, British Philosopher

प्रतिदर्शन/ विचार मग्नता क्या है-

ऊपर दिए गए चित्र को देखें | सामान्य रूप में हमे यह एक पुरुष का प्रतिबिम्ब नज़र आएगा | परन्तु इसे देखने का विभिन्न लोगो के अलग-अलग नजरिये हो सकते हैं | चित्र को देखकर विचार मग्न होना , यही हमारा विषय है, जिसके बारे में हम आगे जानकारी हासिल करेंगे | सिर्फ चित्र ही नहीं कभी-कभी किसी लेख को पढ़ने के बाद हमे मन-मस्तिष्क में विचारों का आना भी विचार मग्नता का ही अन्य रूप है |

प्रस्तावना- हम में से बहुत से लोग यह अनुभव करते हैं कि वह निष्क्रिय पाठक हैं | जब हम कोई पाठ्यपुस्तक पढते हैं या किसी पत्रिका का लेख ओअध्तय हैं या परीक्षा में किसी प्रश्न का उत्तर अपनी रटने स्मृति के आधार पर देते हैं | यह आवश्यक हैं हमारे लिए की हम जो भी पढ़े उसका मूल-भाव समझकर एवं मूल्यांकन करके विचार अवश्य प्क्रट करें | प्रतिदर्शन यह सुनिश्चित करें कि हम आस-पास की सूचनाओं की ओर भी विवेकी रहे |

सरल शब्दों में समझा जाए तो Reflection का अर्थ प्रतिदर्श/ वैचारिक/विचार मग्न/ परावर्तन एवं उसके विवेचन से है |प्रतिदर्श/ वैचारिक/विचार मग्न/ परावर्तन सुनने,बोलने,पढ़ना (पठन-पाठन) और लेखन अर्थात भाषा एवं अन्य विषयों की सभी विधाओं में उपयोग की जाती है |

अर्थ –विचारमग्न अथवा प्रतिदर्शन एक अभ्यास है जो हमे अन्वेषण, परीक्षण और समझने की सुविधा हमारे महसूस करने, सोचने और पढ़ने के आधार पर देता है | यह अकादमिक सामग्री, व्यक्तिगत अनुभव और अंतर-संबंध का सावधानीपूर्वक समझने वाला विधार है |यह एक प्रकार से स्वं की आंतरिक जांच/ परीक्षण है जोकि किसी भी सिद्धांत के उद्देश्य और हमारे दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओ को समझने के लिए गहराई तक ले जाती है | अत: किसी भी पाठ्य-सामग्री को प्रतिदर्शन की दृष्टि से पढ़ना हमे चिंतनशील बनाता है |

Types of Reflection/ प्रतिदर्श अथवा विचार मग्न के प्रकार-

विचार मग्न लेखन (Reflective Writing)- यह एक प्रकार का अभ्यास है जिसमें लेखक सत्य अथवा काल्पनिकदृश्य , घटना, बातचीत, स्मृति, बीती हुई घटना आदि पर अपना व्यक्तिगत प्रतिबिम्बन , अपनी जिंदगी की सोच, अनुभूति, भावना या स्थिति के आधार पर देता है | बहुत से प्रतिबिम्बन करने वाले लेखक अपने मस्तिष्क में बहुत से प्रश्न रखकर लिखते हैं, " मैने क्या नोटिस किया", इससे मुझमें कितना बदलाव आया ? आदि | अत: इस प्रकार के लेखन में महज़ व्याख्या नहीं होती बल्कि वह घटना के क्रम को पुन: दोहराता है और प्रत्येक अनुभूति को अर्थ देता है, जिससे वह जान सके कि क्या सही हुआ, किस प्रकार का परिवर्तन किया जा सकता है या इससे मैने क्या सीखा |

यह माना जाता है कि ज्ञान अर्जन हेतु पढ़ने की क्रिया एक आधुनिक खोज है । पढना मूलत: विभिन्न प्रकार के संकेताक्षरों के अभिप्राय: को समझ कर उसे एक नया अर्थ प्रदान करने से हैं। पढ़ने एवं लिखने हेतु किसी भी भाषा में संकेताक्षरों का अपना ही महत्व है। इन्हीं संकेताक्षरों को ठीक से परिभाषित कर देने पर यह लिपि का रूप ले लेती है। किसी भी पाठ को पढ़ने के दौरान आपके मन में तरह तरह के विचार आ सकते है। इन्हीं विचारों को ठीक तरीके से लिपिबद्ध करना हो प्रतिदर्श लेखन कहा जाता है। अत: इस हेतु यह कहना न होगा कि विचारों या भावों को जन्म देने हेतु पाठ में पूरी तरह डूब जाना ही उचित होगा।

प्रयोगात्मक विचार मग्नता (Experimental Reflection)-यह व्यवसायिक कार्यक्रम में लोकप्रिय है, जैसे- व्यापार, नर्सिंग और शिक्षा आदि | सिद्धांत और अभ्यास के मध्य संबंध बनाने में प्रयोगात्मक प्रतिबिंब की बहुत आधिक महत्ता होती है | जब कभी आपको कार्यस्थल पर अपने अनुभवों के ऊपर चिंतन करने को कहा जाता है, आप सिर्फ अपने पुराने अनुभवों का चिंतन नहीं करते अपितु बल्कि उस समय के विचारों का भी आप मूल्यांकन करते हैं | किसी सिद्धांत अथवा दृष्टिकोण का आंकलन अपने अवलोकन और अभ्यास और उसका मूल्यांकन अपने व्यावसयिक क्षेत्र के ज्ञान और कौशल के आधार पर करते हैं | अपने अनुभवों का चिंतन करने के बाद ही हम अपनी योजनाओं को और बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं |

विचार मग्न पठन (Reflective Reading)- छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए चिंतनशील पुस्तकपठन आवश्यक है | अध्यापक के तौर पर हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम छात्रों को आजीवन पाठक बने रहने की प्रेरणा दें, परन्तु हम स्वंय में ही इस प्रक्रिया के पोषण की उपेक्षा कर देते हैं |

विमर्शपूर्ण पठन से यंह अर्थ है कि हम जिस भी साहित्य या पाठ का पठन करें, उसे तार्किक और चिंतनशील होकर पढ़े एवं उसके हर परिपेक्ष्य की विवेचना करें |

विचार मग्न अध्यापन (Reflective teaching)-इस प्रक्रिया का अर्थ है कि जंहा अध्यापक अपने अध्यापन करने के तरीके को सोचे एवं समझें कि किस प्रकार से विषयवस्तु को पढ़ाया जा सकता है और किस प्रकार से अध्यापन प्रक्रिया को सुधारा या बदला जा सकता है, जिससे की बेहतर अधिगम हो सके | विमर्शपूर्ण अध्यापन के द्वारा यह समझा जा सकता है कि वर्तमान में क्या और क्यों किया जा रहा है और छात्र कितना ग्रहण कर रहे रहे हैं | अध्यापक इससे यह ही समझ सकते हैं कि ऐसी किस प्रक्रिया को अपनाया जाए जिससे छात्र अधिक से अधिक समझ सकता है | विमर्शपूर्ण अध्यापन से मूल तात्पर्य विद्यार्थियों के आधिगम के तरीके, संप्रत्यय ग्रहण करने के तरीके एवं आवश्यकतानुसार अध्यापन से भी है जिसमें विद्यार्थियों की कमियों को विमर्श के उपरान्त ठीक किया जाता है |

इस पाठ्यकम में विचारमग्न पठन और लेखन पर विस्तार से चर्चा की जाएगी | **विचारमग्न पठन प्रक्रिया के प्रमुख सोपान हैं-**

पहचान- लिपि संकेतों को सांकेतिक ध्वनियो को एक साथ जोड़ना | इस ध्वनि संकेतों से गठित शब्दों, वाक्याशों तथा वाक्यों को पहचानना |

अर्थ ग्रहण- लिपि संकेतों द्वारा बने शब्दों , वाक्यों में निहित अर्थ को संदर्भ अनुसार समझना है | इसमें विभिन्न प्रकार के अर्थ ग्रहण करना सिखाया जाता है

मूल्यांकन– इसमें पाठक ग्रहण किए गए विचारों की उपयोगिता , सार्थकता, विश्ववसनीयता पर विचार या मूल्यांकन करता है |

अनुप्रयोग– यह अंतिम सोपान है | विचारमग्न पठन का उद्देश्य तभी पूर्ण होगा जब पाठक पुस्तक/रचना/लेख/अन्य को पढकर अपने व्यव्हार , विचार और जीवन मूल्यों में परिष्कार लाए |

ऐसी प्रकार विचारमग्न लेखन में तीन बातों का समावेश किया जाना चाहिये (इसको उदहारण के माध्यम से हम इसी इकाई में विस्तार से पढ़ेंगे |)-

वर्ण- एकाकी वर्णों को ठीक प्रकार से रूप प्रदान करने की योग्यता |

वर्तनी- वर्ण संयोजन के प्रयोग का समुचित ज्ञान और रचना |

रचना- लिखित शब्द प्रतीकों या रचना द्वारा आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास |

इसी क्रम को बढ़ाते हुए विचारमग्न/ प्रतिदर्शन को हम विस्तार से पढ़ते हैं-

Aims and Objectivesof Reflection/ प्रतिदर्शन अथवा विचारमग्नता केध्येय एवं उद्देश्य

Aim/ ध्येय- कार्य आधारित आधिगम अथवा कार्य अनुभूति उपागम के लिए विचारशील लेखन का सृजन हेतु सूचित एवं समर्थन करना |

Objectives/ उद्देश्य- इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

- आप में समाहित ज्ञान द्वारा कार्य करना |

- विचारशील लेखन की विशेषताए निर्धारित करना |
- कैसे सघन विचारमग्न लेखन होता है, का निर्धारण करना |
- विचारमग्न लेखन आरम्भ करने के योग्य बनना |
- आपके विचारशील लेखन समर्थन हेतु स्त्रोतों को स्थापित/ निर्धारित करना |

Introducing Reflection/विचार मग्नता का परिचय

शिक्षा में शामिल सभी के लिए प्रतिबिम्बन या प्रतिदर्शन अभ्यास में शैक्षिक वृद्धि हो रही है | प्रतिबिम्बन का उत्कर्ष वर्णन हेरी पोर्टर के उपन्यास, “ द गोब्लेट ऑफ फायर ” में देखा जा सकता है | नीचे दिए गए अनुच्छेद में मुख्य जादूगर एवं प्रधान शिक्षक डम्बलडोर अत्यधिक चिंतन रखने के बारे में हैरी से वार्ता कर रहा है |

“ हैरी अश्म पत्थर पर टकटकी लगाकर देख रहा है | उसकी आँखों में पदार्थ घुमते एवं फिसलते हुए, श्वेत- रजत अवस्था के पश्चात उनके मूल रूप में लौट चुके थे |

“ यह क्या है ? हैरी कांपता हुआ पुछता है |

“यह ? इसको पेंसिव कहते हैं, “ डम्बलडोर बोला | मैं कभी- कभी पाता हूँ और मैं निश्चित हूँ आप एहसास जानते हो, कि मैं आराम से अत्यधिक विचार एवं स्मीरितियो मेरे मस्तिष्क में भर चुका हूँ |”

“ अररर “, हैरी ने कहा, जो सत्यनिष्ठ नहीं कह सका कि वह व्यक्तियों या वस्तुओं के समूह की किसी भी अभिव्यक्ति को हमेशा महसूस करता था |

“ इस समय “ डम्बलडोर, पथरीले पठार को संकेत करते हुए बोला ,“ मैं पेंसिव प्रयोग करता हूँ | किसी के मस्तिष्क से अतिरिक्त विचार सहजता से निकालता हूँ, उनको पठार पर उडेलता हूँ , और इत्मिनान से उनका परीक्षण करता हूँ | यह विशेष निशान पद्धति एवं उसके संबंध में सरल हो जाता है, आप समझते है, जब वे इस रूप में होते हैं | “ (रोलिंग, 2000)

उपरोक्त वाक्यांश में जे.के.रोलिंग ने अपने पात्र डम्बलडोर के माद्यम से विचार मग्नताके संदर्भ में अपने विचार रखे हैं|

विचार मग्नता की आवश्यकता-

प्रतिदर्श /विचार मग्नता क्यों-

“ अधिगम के क्रम में सामान्य अनुभूति रखना पर्याप्त नहीं है। इस अनुभूति के बिना मनन से यह शीघ्रता से भूला जा सकता है, अथवा इसके अधिगम सम्भाव्य से खो सकता है। इस विचारमग्नता से विचारों एवं अनूभूतियों में जिससे सामान्यीकरण अथवा धारणाएं उत्पन्न की जा सकती है। और यह सामान्यीकरण है जो प्रभावी समाधान के लिये नवीन परिस्थितियों को अनुभूति देती है।”(गीब्स1988)

“ It is not sufficient simply to have an experience in order to learn. Without reflecting upon this experience it may quickly be forgotten, or its learning potential lost. It is from the feelings and thoughts emerging from this reflection that generalisations that allow new situations to be tackled effectively.” (Gibbs 1988)

अंत:करण लेखन सिंद्वात और लोगों से अन्यत्र दृष्टिकोण/ परिपेक्ष्य के परवर्ती / आगे के ध्यान केंद्रित के द्वारा आपका और आपकी अनुभूति पर गहन मननता/ विचारमग्नता द्वारा आपके कार्य से अन्तः दृष्टि लाभ के लिये एक अवसर प्रदान करती है। विचारमग्नता के द्वारा हम कार्य से गहन अधिगम कर सकते हैं।

विचारमग्नता की विषय वस्तु एंव प्रकृति-

अत: विचारमग्नता से आपका क्या मतलब है ? विचारमग्नता की प्रयोगात्मक परिभाषा मून के द्वारा प्रस्तुत है-

......पूर्वभासी परिणाम अथवा उद्देश्य के साथ मनो प्रक्रिया का एक रूप जिसे, संबंधित समस्या अथवा अरचित विचारों जिनका कोई सुस्पष्ट हल नहीं है, पर प्रयुक्त होती है। (मून 1999 पृष्ठ संख्या 23)

....a form of mental processing with a purpose and/or anticipated outcome that is applied to relatively complex or unstructured ideas for which there is not an obvious solution. (Moon 1999 pp 23)

- विचारमग्नता हेतु उददेश्यों के कुछ चित्रण द्वारा वह जारी रहती है:
- हम क्रम में दर्शाते हैं -
- हमारी स्व अधिगम प्रक्रिया केन्द्रित- मेटा अनुभूति (metacognition) की प्रक्रिया
- किसी पर आलोचनात्मक समीक्षा: - हमारा निजी व्यवहार, व्यवहार की उपज अथवा अन्य संबध को दशाओं मे कभी विचारों में अथवा दोनों के मिश्रण में।
- अवलोकन से अवधारणा सृजनः-हम सामान्यीकरण से अवधारणा रचते/सृजन करते हैं - कभी व्यवहारिक दशाओं में, कभी विचारों अथवा दोनों के मिश्रण में |
- व्यक्तिगत अथवा स्व विकास में व्यस्त
- निर्णय निर्माण अथवा अनिश्चित पुनः हल
- सशक्तिकरण एंव व्यक्तिगत रूप से अपने आपको को बंधन मुक्त करना (और तब यह स्व विकास के नजदीक होता है)अथवा हमारे सामाजिक समाजों के संदर्भ में हमारा अपना बंधन मुक्ति या सशक्तिकरण के लिये। (उद्वत पृष्ठ संख्या 23)

इस उदाहरण में, जबकि आपकी आत्म लेखन/ प्रतिदर्श लेखन आपके कर्म स्थली अनुभव से संबंधित होना चाहिए। पूर्ण केंद्रित और बालाघात आपकी प्रतिबद्वता के लिये है।

जब आपकी प्रतिदर्श लेखन मूल्यांकित होती है आपके शिक्षक आपकी अनुभूति की उत्कृष्ट समीक्षा से अधिक अपेक्षा करेंगे , वे आप से गहन आत्म मग्नता के साक्ष्य हेतु अनुरोध करेगें।

इसका मतलब वर्णन से ऊपर उठकर/आगे जाकर , और गहन पड़ताल /जाँच के लिए आपकी अनुभूति वैचारिक करना |

करके सीखाना में, ‘संरचनात्मक पूछताछ’ के लिये अवस्थाओं का चित्रण गिब्बस (1988) द्वारा किया गया है और जो गहन विचाराामग्नता/ प्रतिदर्श बढाता है:

- **विवरण**- प्रतिदर्श का उद्दापन क्या है ? (घटना, कार्यक्रम, अवधारणात्मक विचार) आप कौनसा प्रतिदर्श कर रहे है ?
- **अहसास**- आपकी अनुभूति एंव प्रतिक्रिया क्या थे?
- **मूल्यांकन**- अनुभूति के बारे में बुरा और अच्छा क्या था ? निर्णय आकलन कीजिए।
- **विश्लेशण**- परिस्थिति का आप क्या बोध कर सकते है ? आपकी सहायता के लिये अन्यत्र अनुभव से विचारों का जन्म होना या वास्तव में क्या किया जा रहा था ?
- **निष्कर्ष सामान्य** - इन अनुभूतियों एंव विश्लेषणों जिससे आप मुखालित हुये हो, से सामान्य बोध में आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते है ?
- **निष्कर्ष विशेष**- आपके अपने विशेषक,एकल, निजी परिस्थिति अथवा कार्य करने के तरीके के बारे में आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते है।
- **व्यक्तिगत कार्य योजनाऐ**- अगली बार आप इस प्रकार की परिस्थिति में हट कर क्या करने जा रहे हैं ? आपने जो सीखा है के आधार पर आप कौनसे कदम उठायेगें।

हटोन और स्मिथ (1995) शिक्षण अभ्यास से शिक्षक प्रतिदर्श के विकास में चार स्तर के बारे में जानकारी दी है । आपके प्रतिदर्श लेखन में आपके शिक्षक उच्च स्तर पर प्रतिदर्श के साक्ष्य के लिये देखेंगे |

- **विवरणात्मक लेखनः-** यह साहित्य रिपोर्ट अथवा घटनाओं का वर्णन है। इस वर्णन के आगे वार्ता नहीं है। लेखन प्रतिदर्श के साक्ष्य नहीं दिखाने पर केंद्रितहोता है। वर्णात्मक लेखन हेतु घटनाओं का आधारभूत वर्णन किया जाता है। लेकिन संबधित वर्णनात्मक भाषा के कारण धारणा के वास्तविक साक्ष्य नहीं होते है।
- **संवादी प्रतिदर्श**- यह लेखन सुझाव देता है कि कार्यक्रमों और कार्यवाहियों जो वार्ता के भिन्न् स्तर का निर्देशन करते है। यहाँ उचित कदम/ पुनर्विचार का समय देता है। और यहां किसी के एंव वादे में देर तक ध्यान से सोचने का भाव होता है। स्वयं से बात क्र सकते और गतिविधियों एंव एंव कार्यक्रमों में स्वयं की भुमिका का छान बीन कर सकते है। यहाँ निर्णय की गुणवता पर विचार होता है। एंव प्राकल्पना एंव वर्णन के लिये संभावी विकल्प होते है। प्रतिदर्श, परिप्रेक्ष्य एंव तत्वों से जुडा हुआ। एकात्मक अथवा विश्लेष्णात्मक होता है |
- **आलोचनात्मक प्रतिदर्श**-आलोचनात्मक प्रतिदर्श का यह रूप,के अतिरिक्त, साक्ष्य को दर्शाता है कि अधिगम कर्ता जागरूक है। गतिविधियों एंव कार्यक्रमों से जो बहुपरिप्रेक्ष्य के द्वारा वर्णन योग्य या संबधित कर सकते है।लेकिन विविधता एंव सामाजिक, राजनैतिक संदर्भो के द्वारा प्रभावित एंव स्थापित होता है।

ब्लुम (1964) वैचारिक प्रक्रियाओं के विभिन्न स्तरों को परिभाषित करते है। जिसे वह एक सोपानक्रम में प्रस्तुत करता है। ये पूर्ण प्रतिदर्श के लिये संरचना के रूप में प्रयोग भी किया जा सकता है। वे योजनागत निर्णयों के मूल्य के निर्माण के द्वारा साक्षित मूल्यांकन से सूचना पुनर्भरण के द्वारा साक्ष्य जानकारी से बदलाव करते है। आपके प्रतिदर्श लेखन में आपके शिक्षक इन उच्च स्तरीय प्रक्रियाओं के साक्ष्य के लिये तलाश करेंगे |

कठिनाई में वृद्धि ↓

प्रक्रिया	**स्पष्टीकरण**
ज्ञान	सूचना का पुनः स्मरण एंव पहचान – वर्णित कार्यक्रम
व्यापकता	दुभाषिया , अनुवादक अथवा संक्षिप्तीकरण सूचना देती है- कार्यक्रमों की प्रदर्शनकारी समझ	
प्रयोग	मूल अधिगम संदर्भ से भिन्न दशा में सूचना प्रयुक्त होती है।
विश्लेषण	स्पष्ट संबंध तक समग्र को खंडो में विभक्त करते है- अनुभवों क विभक्तिकरण
मूल्यांकन	निर्णय निर्माण की सम्मिलित कार्यवाही अथवा तर्क या कसौटी पर आधारित आकलन- निर्णय निर्माण करता है	

अन्य प्रतिरूप जो आपकी प्रतिदर्श लेखन संरचना में आपकी सहायता करते हैं और जिन्हें आप अधिक सहायक पा सकते है। उन्हें वेब अनुसंधान एंव पुस्तकालय द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। गूगल सर्च इंजन बहुत ही उपयोगी है।

इसी क्रम में आगे हम प्रतिदर्श लेखन किस प्रकार किया जाता है, उसका अभ्यास एक उदाहरण के माध्यम से समझेंगे |

प्रतिदर्श लेखन में अभ्यास न. 1

22 वर्ष का युवक, जब उसने अपनी   स्नात्तक पूर्ण की, तो उसे एक कंपनी में कार्य करने का अनुभव मिला | उसे अपने कार्यस्थल पर एक प्रस्तुततिकरण देना था | अपने कार्यस्थल में दलीय सम्मेलन में प्रस्तुततिकरण के उसके तीन वर्णनों को पढ़िये | एक ही कार्यक्रम का वर्णन प्रतिदर्श के तीन भिन्न स्तरों पर लिखा है :-

वर्णनों को पढ़ें, ये कैसे लिखे गये हैं-

प्रस्तुतीकरण

A. मुझे एक प्रंबधन कंपनी में काम के मेरे तीसरे सप्ताह में साप्ताहिक दलीय सम्मेलन के लिये एक कार्यक्रम मद (कोई एक काम) लेना था। मुझे परियोजना के बारे में बात करना था जिस परमैं कार्य कर रहा था (प्रंबधन सूचना तंत्र के लिये नया डाटाबेस (तथ्य) बनाना) | मैं पहले ही एक प्रस्तुतीकरण बना चुका था और तब मैं अपने कार्य कौशलों पर निर्भर था | कार्य करने के बावजूद, मैनेरास्ते में इसको बनाने पर पर्याप्त समय दिया जिनको मैं देख चुका हूँ । अन्य भी समान प्रस्तुततिकरण बनाते हैं |

अंतिम दलीय सम्मेलन की प्रस्तुततिकरण में, मेरे सहकर्मी के द्वारा की गई प्रस्तुति अच्छी हुई। उसने पॉवर पाईन्ट का प्रयोग किया था। और मैंने भी इसे प्रयोग करने का निश्चय किया | मैंने निश्चय किया था कि एक अच्छी प्रस्तुततिकरण एक अच्छी योजना से बनती है और वो सभी आकृतियां रखती है। जिनकी किसी को जरूरत होनी चाहिए । इसलिएमैंने तैयारी में अधिक समय दिया और मेरे अंदर विश्वसनीय भावना पैदा हुई।

यद्यापि मैं चिंतित हुआ था जब मैंने अहसास किया कि वे सभी मेरे बोलने का इंतजार कर रहें थे और मेरी आवाज मेरी चिंता की वजह से लडखडाई | मैं नहीं जानता था कि इसको कैसे रोका जाए । प्रारंभिक स्थिति में, मैंने ध्यान दिया है कि पॉवर पाईन्ट के बावजूद मैं जो कह रहा था कि लोग समझने में असमर्थ प्रतीत हुये। पॉवर पाईन्ट का अर्थ है कि लोग मेरी प्रस्तुततिकरण को,दोनों , जो मैं कह रहा था और जो कुछ मैंने स्लाइड पर बनाया था उसे प्राप्त कर समझ सकेंगे |

वह लोग जो इसका मतलब दो प्रकार से प्राप्त कर चुके थे, लेकिन मैंने ध्यान दिया कि मिसेज शा(मेरी मालिक) ने कुछ उन बातों को दोहराया जिनको मैं बहुत बार कह चुका था और एक अथवा दो बार मेरे लिए प्रश्नों का उतर दिया था। इसने मुझे असहज कर दिया और मैंने महसूस किया कि यह अधिक संरक्षण देने वाला था और मैं उलझन में था ।बाद में मेरे सहकर्मियों ने बताया कि वह ऐसा अक्सर करती है ।मैं निराश था कि मेरा प्रस्तुततिकरण उत्तम प्रतीत नहीं हुआ।

मैंने प्रस्तुततिकरण के बारे में बहुत दिन सोचा और तब प्रस्तुतिकरण के बारे में मिसेज शा से बात की (जब वंहा मेरा अलावा कोई और भी ना था) | उसने मुझे अगली बार सुधार करने के लिये कुछ बिंदुओं की एक सूची दी | जिसमें निम्नलिखित बातें शमिल थी |

- पॉवर पाईन्ट पर कम निर्भरता
- बातचीत करने का सही तरीका
- किसी भी प्रकार से अपने आप को शांत करना।

मुझे भी एक अलग तरीके से आंकडों में लिखना था जिससे की वे बेहतर समझ में आ सकें। उसने सुझाव दिया है कि शायद अगले सप्ताह दल की बेहतरी के लिये मुझे एक और प्रस्तुततिकरण देना चाहिए , जिससे की मैं अपना प्रदर्शन सुधार सकता हूँ।

B. प्रंबधन कंपनी में नौकरी के मेरे तीसरे सप्ताह में सप्ताहिक दलीय सम्मेलन के लिये एक कार्यक्रम मद को लेना था | मुझे उस परियोजना के बारे में बात करनीथी, जिस पर मैं कार्य कर रहा था। मुझें प्रबधन सूचना तंत्र के लिये नया आकंडा बनाना था। मैं पहले भी एक प्रस्तुतिकरण दे चुका था और इस बार मैं मरे कार्य कौशलों से संतुष्ट था | अत: मैंने महसूस किया कि अब और तब के बीच यंहा ध्यान देने योग्य अंतर है, खासकर इस दशा में (क्योंकि वंहा मेरे सिर्फ साथी छात्रों और शिक्षक के सामने प्रस्तुततिकरण था) मैं विश्वस्त था क्योकि तैयारी के लिए मैने पर्याप्त समय व्यतीत किया था , चूँकि यहा सभी व्यक्ति पॉवरपाईन्ट का प्रयोग करते है। अत: मैंने महसूस किया कि मैं बेहतर प्रयोग कर सकता हूँ | लेकिन मैंने महसूस किया कि यह बेहतरी के लिए नहीं था | मैंने बहुत सारे आंकड़े भी प्रस्तुत किए जिससे मैं प्रश्नोतर दे सकूं। मैंने सोचा कि मंच पर कोई भी प्रश्न आंकडो के लिये ही होगा।जब मैं तैयारी दुबारा कर रहा था, तब मैंने महसूस किया कि मैं जबरदस्ती खुद को साबित करने की कोशिश करता हूँ | या मैं वैसी प्रस्तुततिकरण बना सकता हूँजैसे कि मेरे सहकर्मी ने बनाई, जिसका प्रस्तुततिकरण अंतिम था।मैं सभी को प्रभावित करना चाहता था। मैंने महसूस नहीं किया था कि प्रस्तुतिकरण के लिये बहुत अधिक सीखना होता है और मुझे कितनापॉवरपाईन्ट को प्रयोग के लिये जानने की आवश्यकता है।

जब सम्मेलन में प्रस्तुतिकरण दिया तो मैंनेशांत रहने की कोशिशकि लेकिन ऐसा नहीं हो पाया | पहले ही पॉवर पॉइंट गलत हो गया और मुझे चिंता शुरू हो गई | मैं यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि मैं शांत और विश्वस्त हूँ परन्तु परिस्थितियों की वजह से और मामला खराब हों गया क्योकि मैने कठिनाईयों को नहीं स्वीकारा और ना ही किसी से सहायता के लिए पूछा | मेरे अधिक बोलने से , मेरी वाणी अधिक लडखडायी |मैंने महसूस किया , जिस प्रकार के प्रश्न पूछे जा रहे थे, वे नहीं समझे थे कि मै क्या कह रहा हूँ | वे स्पष्टीकरण के बारे में बात रहे थे, ना कि आकडों के लिये। मैंने और अधिक बुरा महसूस किया जब मिसेज शा, मेरी मालकिन, ने, मेरे लिये प्रश्नों का उतर देना शुरू कर दिया। मैने घबराहट महसूस किऔर मैं आधिक असहज हो गया |

इस खराब प्रस्तुतिकरण के परिणामस्वरूप मेरा स्व सम्मान काम पर कम हो गया है। मैं सोच रहा था कि कंपनी में सब कुछ ठीक कर रहा था। कुछ दिनों के बाद मैं मिसेज शा से मिलने गया हमने इस बारे में बात की | मै अभी भी महसूस कर रहा था कि उनका हस्तक्षेप मेरे लिये

सहायक नहीं था। काम की बात यह थी कि बुहत से सहकर्मी बोले कि वह ऐसा ही करती है। यह संभवतः उनका व्यवहार था |मैंने बहुत क्षेत्र सोचे जंहा मैं अच्छा कर सकता था | मुझे पॉवर पाईन्ट के बारे में आधिक जानने ,इसके अभ्यास और इसके उचित प्रयोग को समझने की जरूरत थी। मैंने पहचाना भी कि मेरे पुराने कार्य कौशल मुझे व्यक्तिगत विश्वास दे सकता है | लेकिन मुझे महसूस हुआ कि बुलंद आवाज की मुझे ज्यादा आवश्यकता थी, मुख्यतः जब मैं पॉवर पाईन्ट से भटक गया था |आकडों पर अधिक निर्भर होना किसी भी तरह से ठीक नहीं था |

C. मैं यह दोबारा मेरे कार्यालय में लिख रहा हूँ। यह दो दिन से पहले की बात है |

एक प्रबंधन कंपनी में काम शुरू करने के तीन सप्ताह बाद मुझे दलीय सम्मेलन हेतु एक कार्यक्रम में मद को चुनना था, वह परियोजना जिस पर मैं काम कर रहा था। मुझे मेरी प्रगति रिपोर्ट की प्रस्तुति देनी थी (जिस परियोजना पर मैं कार्य कर रहा था) |मै कंपनी के प्रबधात्मक सूचना तंत्र के लिये नवीन आधार आकडें सृजन का कार्य कर रहा था। मैं तुरन्त चितिंत हुआ। मै सही तथ्यों को नही बताने एंव ठीक-ठाक प्रश्नोतर देने में असमर्थ होने के बारे में भयभीत था। मैंने विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय एक प्रस्तुतिकरण दिया था और वैसा ही शुरुआत में, मैंने वंहा महसूस किया | तब मैं सोच रहा था कि इस बार कि तरह ही ,मैं मेरे कार्य कौशलों का प्रयोग करूँगा । जो हमेशा सर्वप्रथम और अंततः मेरे विश्वास में सहायक होता था । वास्तविकता यह थी कि अन्तिम समय में मैं ठीक था, परन्तु इस समय संपूर्ण प्रस्तुततिकरण में वह (कार्य कौशल) मेरा सहायक नहीं बन पाया।

मैंने पावर पाईन्ट प्रयोग करने का निश्चय किया। मैं इसके प्रयोग के बारे में अधिक सहज ना था ।मैं इसे प्राय: गलत होते हुये देख चुका था । परन्तु सभी यंहा पॉवर पाईन्ट का प्रयोग करते हैं, अत: मैंने सीखा | यंहा प्रस्तुतीकरण इसके बिना प्रयोग के मैने नहीं देखीथी और अत: पॉवर पाईन्ट का प्रयोग करना भी महत्वपूर्ण था। मैं निश्चित नहीं था, कि सत्र के समय मैंपॉवरपाईन्ट को पर्याप्त जानकारी होने के बावजूद भी सही इस्तेमाल कर पाऊंगा या नहीं।

जब प्रस्तुतिकरण की बारी आयी तो मैंवास्तव में इसे अच्छा करना चाहता था वैसी ही जैसी कि सप्ताह पहले प्रस्तुतिकरण हुई थी, तब किया था | मुझसे पहले वाली प्रस्तुततिकरण रूचियुक्त, सूचनात्मक और स्पष्ट थी। मैंने सोचा कि उनकी हस्त सामग्री अच्छी थी |

कार्यक्रम में सत्र बहुत त्रासदी भरा था और परन्तु मुझे मेरे काम ने असहज छोड़ दिया था और यहाँ तक कि इसके बारे में, मैं घर पर भी चिंतित था | मैं सोच रहा था कि किस प्रकार से एक सामान्य प्रस्तुतिकरण मुझ पर प्रभाव छोडती है | मुझे लगा किपॉवर पाईन्ट गलत हो गई (शायदमैंने गलत जगह पर क्लिक कर दिया था) | मेरे प्रयास शांत एवं ठंडा होने में असफल हों गए थे। मेरी आवाज़ लडखडा गयी थी | ऐसामुझे अहसास हुआ | मेरे सहकर्मी ने में कहा कि

इसके बाद भी मैं वास्तव में बिल्कुल शांत दिखा था। बावजूद इसके कि मैं क्या अहसास कर रहा था (ऐसा कह कर शायद वह मेरी सहायता करने की कोशिश कर रही थी) जब मैने उस क्षण को वापिस सोचा , यादि मैं तब शांत रहता तो मैं परिस्थिति को संभाल लेता (बावजूद इसके की मुझे उस समय क्या अहसास हुया था) | स्थिति तब बद से बदतर हो गयी थी और मैं जानता हूँ कि मेरी दशा स्पष्ट थी क्योंकि श्रीमती शा, मेरी मालकिन मेरे लिए उतर देना शुरू हो गई थी जब लोगो के द्वारा मुझे प्रश्न पूछे जा रहे थे।

मै दुबारा उस भद्दी प्रस्तुतिकरण के बारे में सोच रहा हूँ- जोकि पिछले सप्ताह इसी समय की बात थी | मैं पढ रहा हूँ जो इसके बारे में पहले लिख चुका हूँ। अब दुबारा इस पर लौटा हूँ, मेरा नजरिया अब कुछ बदला हुआ साहै। मै सोचता हूँ कि यह उतनी बुरी नही थी जितना कि मुझे उस वक्त अहसास हों रहा था | बहुत से मेरे सहकर्मियों ने इसके बाद बताया कि श्रीमति शा हमेशा प्रश्नोंतर में हस्तक्षेप करती है। मुझे अगली बार इस रूकावट से बचने के लिये कुछ करने कि जरूरत थी | कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिये , अथवा जब वह शुरू होती है तो उस परिस्थिति का सामना कैसे करना है | इसे सिखने के लिये मुझे पुस्तकालय जाना चाहिए।

अब मुझे श्रीमति शा से भी बात करनी थी | जब मैने उनका सामना किया तो मुझे लगा कि उनमें मेरा विश्वास उच्च नहीं है | यद्यपि सामान्यतयाः मैं बहुत सकारात्मक अनुभव करता हूँ। मैं विश्लेषण प्रारम्भ कर देता हूँ कि किस तरह से मैं बेहतर प्रस्तुतिकरण दे सकता हूँ। सप्ताह पश्चात मुझे स्वं पर विश्वास पुन: जागृत हों गया था | मुझे यह सोचने कि ज़रूरत है कि एक अच्छे प्रस्तुतिकरण के लिए क्या किया जाना चाहिये। मुझे नहीं मालूम कि मेरे नाटकीय कौशल मेरी किस प्रकार से मदद कर सकते हैं |

मैं शायद ही दुबारा पॉवर पॉइंट इस्तेमाल करूँगा | मुझे मैनुअल में देखना चाहिये था और मैं ऐसा मानता हूँ कि पॉवर पॉइंट को आप एक हथियार / औजार के रूप में प्रयुक्त करना चाहिये। उसे हावी मत होने दो। मुझे इसका उचित प्रयोग कैसे करते है सीखना चाहिये था।मुझे समझ आ गया है कि किन स्थानों पर मुझसे गलती हुई | भविष्य में मेरी ओर से इस प्रकार की गलती

नहीं होगी, ऐसा मैं पर्याप्त प्रयास करूँगा | मैं श्रीमती शो की आदत को नही समझ गया हूँ, ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिये, मैं जान गया हूँ |

जैसा कि इसे मैं लिख रहा हूँ, मैं ध्यान दे रहा हूँ कि तथ्य जिनके बारे में में पहले लिख चुका हूँ, मेरे लिए कैसे उपयोगी है | मैं परिस्थिति से हट कर देखने के काबिल होने का प्रयास कर रहा हूँ| यह मैने पहली बार लिखा, मैने महसूस किया कि प्रस्तुतिकरण गलत थी और जिसमें मै इसको हटकर नहीं कर सका | मैने महसूस किया कि मै सही समय पर नहीं जान पाया (उदाहरण के लिए श्रीमती शा और उसकी टोकने की आदत के बारे में) |मैने उन क्षेत्रों की भी पहचान कि जिनमें मैं गलत था। उस समय इन्हें मैं नही देख पाया | मुझे मेरा स्व सम्मान वापिस मिल गया। जानते हुए कि कंहा मैं गलत था और अपनी गलती स्वीकार करके मुझे अगली बार सुधार का अवसर मिल गया है और शायद यह श्रीमती शा को हमारे प्रति व्यवहार को सुधारने के लिये यह सहायक हों |

वर्णनों के लक्षण जो प्रतिदर्श के भिन्न स्तरों के सूचक है-

A. यह वर्णन वर्णात्मक है और यह अल्प प्रतिदर्श दर्शाता है-

- यह वर्णन करता है क्या हुआ, कभी भूत अनुभवों को शामिल करता है ।कभी भावी प्रत्याशा- परन्तु सभी वर्णन कार्यक्रम के संदर्भ में होते हैं |
- इसमें युवक की भावनात्मक प्रतिक्रया का संदर्भ है | परन्तु वह वर्णन नहीं कर पाता है, कैसे प्रतिक्रिया उसके व्यवहार से संबधित है।
- विचार जिन को बिना प्रश्न किये अथवा बिना अधिक गहराई से ध्यान रहित लिख दिया गया है |
- वर्णन केवल युवक ने अपनी दृष्टि बिन्दू से लिखा है |

- अतिरिक्त सूचनाएँ शामिल है, जिनका इस विषय पर या व्यवहार पर क्या प्रभाव है | बिना ध्यान में रखते हुएलिखा है |
- सामान्यत: एक बिन्दू एक समय पर सृजित नहीं है और विचार अंतर संबंधित नहीं है |

B. यह वर्णन कुछ प्रतिदर्श के साक्ष्य दर्शाता है –

- यंहा कार्यक्रम का वर्णन है लेकिन जंहा इसमें बाह्य विचार एवं सूचना है, वंहा सामग्री विचार विमर्श और ध्यान देने से संबंधित होनी चाहिये |
- वर्णन कुछ विश्लेषण दर्शाता है |
- व्यवहार हेतु अन्वेषणतमक उद्देश्यों के महत्व को मान्यता दी गई है |
- क्रिया के आलोचक बनने की इच्छा पूर्ण है।
- संबधित और सहायक जानकारी वर्णित है,जहां इसका महत्व है।
- कार्यक्रम पर स्वयं का संपूर्ण प्रभाव देखा जा सकता है- दूसरें शब्दो में, कार्यक्रम से कुछ पीछे की अनुभूति को भी दर्शाया गया है।
- समय के अन्दर वर्णन एक बिन्दू पर लिखा गया है | अत:ऐसा नहीं है, समय के साथ दृष्टीकोण बदल सके , लेकिनआधिक प्रतिदर्श की आवश्यकता है।

C. यह वर्णन सघन प्रतिदर्श दर्शाता है एवं एक पहचान समाविष्ट करता है। जिससे संदर्भ की रचना के साथ, बदले हुए दृष्टीकोण में एक कार्यक्रम देखा जा सकता है |

- स्व प्रश्न साक्ष्य है (समय पर आंतरिक संवाद स्थापित है) उसके अपने व्यवहार का अलग नजरिया बीच में प्रदान किया है (अन्य व उसके अपने अलग दृष्टिकोण शामिल किए हुए हैं)
- युवक वर्णन में दूसरों के उदेश्यों व दृष्टि कोणों को प्राप्त करता है और इनको उसके अपने खिलाफ देखा जा सकता है।

- वह पहचानता है कैसे पूर्ववर्ती अनुभव और सोच (अपनी एंव दुसरों की) उसके अपने व्यवहार का परिणाम है |
- कार्यक्रम से पीछे आने का स्पष्ट साक्ष्य है।
- वही बिंदुओं जिनको वह सीखना चाहती है , को प्रतिदर्श से (प्रक्रिया विभाजन)एवं अपने अनुभव द्वारा सीखने के लिये अपनी सहायता करती है ।
- यहाँ पहचाना गया है कि व्यक्तिगत रचना संदर्भ को संवेदनात्मक दशा नवीन सूचना का अधिग्रहण, विचारों का पुन: आकलन और समय गुजारने का प्रभाव के अनुसार परिवर्तन कर सकते हैं जिसमें यह लिखा जाता है |

प्रतिदर्श लेखन में बहु परिप्रेक्ष्य

आपका प्रतिदर्श लेखन व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होगा, साक्ष्य के प्रकारों और अन्य स्त्रोंतों पर यह अंकित होगा कि यह आप आपके अनुभव समझने में बेहतर हो । जब प्राथमिक स्त्रोतो से, अपने स्थानों से साक्ष्य एकत्रित करते है | आपके खोज की वैधानिकाता को जांच करने की आवश्यकता है। विस्तृत अध्ययन के लिए आंकड़े एकत्रीकरण में बुनियादी सिद्धांत आपके आंकडो ,स्त्रोतों कि गुनता एवं सिद्धांत की भिन्नता की जाँच के लिए हैं |

किसी भी चितंनशील लेखन में व्यक्तिगत बोध सामान्य है जिसमें आपका चिंतन झलकता है। भले ही इसमें मुद्दे और विषय भिन्न भिन्न हो सकते हैं। मून (1999) ने पिछले हवाले से कहा कि चिंतन के विभिन्न प्रयोजनों में तादात्मय स्थापित किया गया है जो आपके चिंतनशील लेखन के लिए एक रूप-रेखा तैयार कर सकते हैं। नीचे दिया गया रेखा चित्र-2 लेखन को समझने के कुछ तरीको पर प्रकाश डालता है।

रेखाचित्र 2

चिंतनशील लेखन को प्रकट करने वाले संभावी स्त्रोत

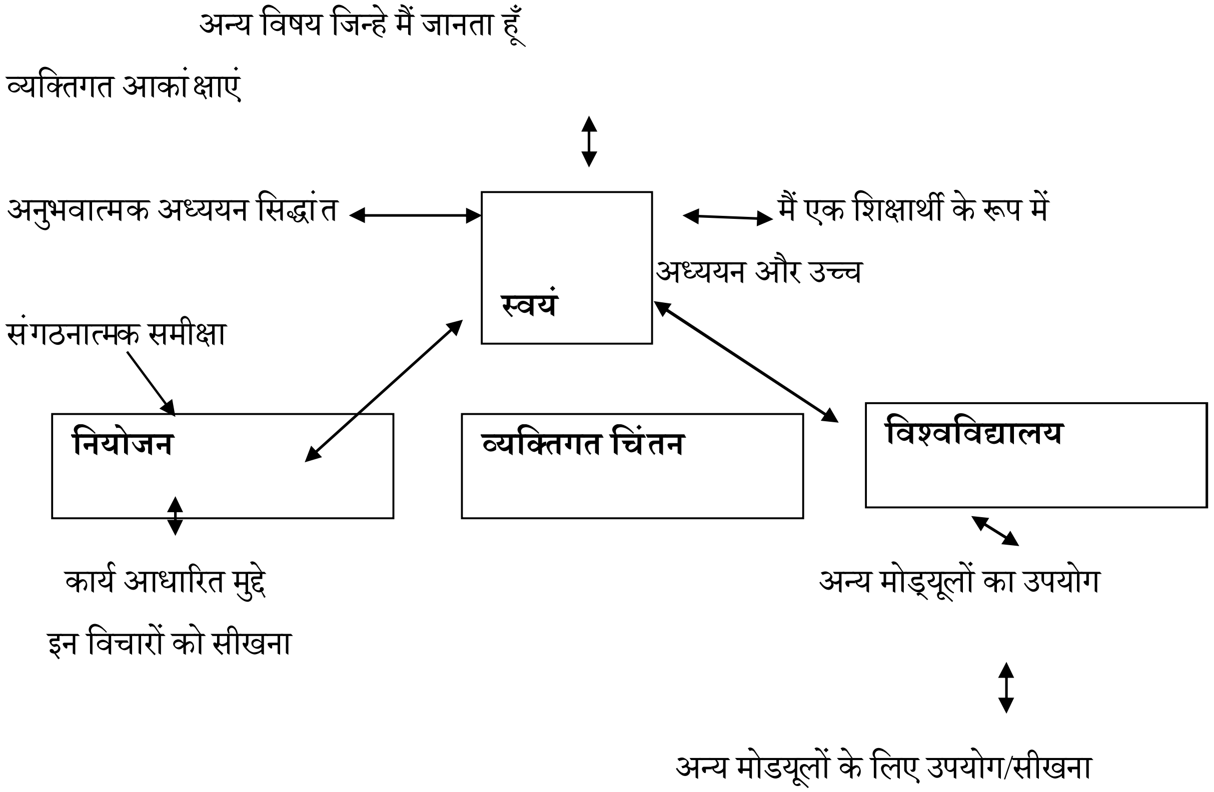

चिंतनशील लेखन का अभ्यास -2

नीचे दी गई एक ही कहानी के 4 विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कीजिए और विचार कीजिए कि पूर्व पृष्ठों पर की गई चर्चा के निमित्त उन्होंने कैसे लिखा है।

उद्यान(I)

मैं आज उद्यान गया। आकाश में सूर्य चमक रहा था और हवा में बादल छितराए हुए थे। सचमुच काफी गरमी थी,बरसात वाले पिछले दिन से भी काफी सुहानी। मैं यहां पहुंचकर बच्चों की खेलने की जगह चला गया। वहां पर बहुत सारे बच्चे थे और मैने देखा कि एक बच्चा गर्मी के हिसाब से बहुत सारे कपड़े पहने हुए था । बच्चे भाग दौड़ रहे थे और ये बच्चा गुस्से से लाल होकर धीमा हुआ और बैठ गया। उसकी उम्र 10 वर्ष के करीब होगी। दूसरे बच्चों ने उसे फिर से बुलाया और वह खड़ा हो गया। वह एकाध बार लड़खड़ाते हुए मुश्किल से खेल पा रहा था। ऐसा लगता था मानो उसमें अपना पांव उठाने भर की भी शक्ति नहीं है । अंतत: वह गिर पड़ा और उठ न सका,लेकिन अभी भी वह हिल रहा था और वह आधे लेटी और आधे बैठी अवस्था में पड़ा रहा व बच्चों को देखता रहा और मुझे ऐसा लगता है कि वह उन्हें बुला रहा था। क्या पता !

खैर थोड़ी देर बाद मैं चला आया। मुझे अपने बच्चों के लिए उनके रात की पार्टी के लिए पकवान के लिए काली मिर्च के ताजे दाने खरीदने के लिए दुकान जाना था। जुड़वा बच्चों ने अपने कई दोस्तो को गर्मियों की छुट्टी प्रारम्भ होने तथा सत्र समाप्ति के अवसर पर भोज के लिए बुलाया था । वे ऐसा सोचते हैं कि जश्न मनाने का यह एक बहाना है लेकिन उनके घर रहने से मेरा काम बहुत बढ़ जाता है । मेरा साथी जेम्स अक्सर कहता है कि जब वे स्कूल वापस जाते हैं तब हमें जश्न मनाना चाहिए लेकिन मैं नहीं चाहता कि वे ये बात जानें।

जब अगले दिन दरवाजे पर समाचार पत्र आया तो पता चला कि पिछले दिन पार्क में एक बच्चा गंभीर रूप से बीमार पड़ गया । वह अस्पताल में जिन्दगी से जूझ रहा था और डॉक्टरों ने बताया कि मामला गंभीर इसलिए हो गया क्योंकि अस्पताल पहुंचने से पहले काफी विलम्ब हो गया था । रिपोर्ट बताती थी कि वह आधे घंटे तक बिना किसी देख-रेख के पड़ा रहा जब तक कि एक बच्चे ने उसकी सहायता करने का निश्चय किया। ऐसा कहा गया है कि कई राह चलते लोगों ने उसे बीमार देखा होगा और रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि क्यों राह चलते लोग कुछ गलत देखने पर कोई कार्रवाई नहीं करते । लेख का शीर्षक था 'वे चले क्यों जाते हैं' ?

उद्यान (2)

यह घटना उद्यान में घटित हुई । यह बच्चा कुछ अन्य बच्चों के साथ खेल रहा था । देखने पर वह थका हुआ और अस्वस्थ दिखाई पड़ता था। मैं बच्चों को कुछ देर देखता रहा और फिर चलते बना । अगले दिन के समाचार पत्र में खबर आई कि बच्चे को गंभीर स्थिति में अस्पताल लाया गया-बहुत ही गंभीर स्थिति में। रिपोर्ट में लिखा था कि उद्यान में बहुत से लोग आ-जा रहे थे जिन्होंने बच्चे को बीमार देखा था लेकिन कुछ नहीं किया।

रिपोर्ट पढ़ने पर मुझे बहुत आत्माग्लनि हुई और बहुत कोशिश करने के बावजूद मैं आत्मालाग्नि के भाव को नहीं बदल सका । मैं इसलिए नहीं रूका क्योंकि भोजन पकाने हेतु कुछ सामान खरीदने मुझे एक दुकान पर जाना था। हालांकि मैंने देखा कि वह बच्चा बीमार था, लेकिन मैंने कुछ नहीं किया। यदि मुझे पता होता कि वह इतना बीमार है, तौ मैं इस परिस्थिति से दूसरी तरह निपटता। मुझे ऐसा लगा कि मैं परिस्थति को भली भांति जानता था लेकिन मैं कुछ करना नहीं चाहता था।

मुझे जाकर पूछना चाहिए था कि उसे क्या दिक्कत है और किसी बच्चे को बुलाकर सहायता भी लेनी चाहिए थी। मैं निश्चय से ऐसा नहीं कहता कि उस समय एम्बूलेंस या कोई डॉक्टर से ही सहायता की जा सकती है- लेकिन अब उससे कोई फर्क नहीं पड़ता । उसकी सहायता यदि उस वक्त की गई होती तो अभी वो जिन्दगी से जूझ नहीं रहा होता।

लगता है कि इस परिस्थिति ने मुझे अंदर से हिला दिया है। इससे मुझे वो घड़ी याद आती है जब मेरे चाचा की मृत्यु हुई थी-लेकिन फिर मुझे ऐसा लगता है कि वो घटना इससे मिलती जुलती नहीं है। वो किसी भी हाल में मर ही जाते। उस घटना की बुरी यादाश्त सिर्फ इतनी है कि मैं उनकी मृत्यु से बहुत दुखी था और उनकी मृत्यु से एक दिन पहले उनसे न मिल पाया था।

इस घटना ने मुझे अंदर तक उससे कहीं ज्यादा झकझोर दिया है,जितना मैंने सोचा था। ये मुझे मेरे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य की याद दिला रहा है। हो सकता है हाल फिलहाल में घटित हो रही बहुत सारी घटना का यह मिलन बिन्दु है और मुझे सोचने की आवश्यकता है कि मेरे जीवन में बृहद स्तर पर क्या कुछ हो रहा है। मेरे जीवन के बारे में इस परिस्थिति ने मुझे जो सोचने पर विवश किया है, उन्हें हल करने के बारे में मुझे विचार करने की आवश्यकता है।

उद्यान (3)

मैं आज उद्यान गया। वहां की रोशनी ने मुझे ऐसा अहसास कराया कि मैं सेंट डेवीड हैड इन वेल्स में चल रहा हूं। जब कभी ऐसी रोशनी होती थी तो मेरे मन में तरह तरह के रेख चित्र बनने लगते थे। इस घटना से अलग, मुझे लगा तब से अब तक मेरी जिंदगी में कई चीजें बदल गई हैं। मैंने अपने बच्चों से किए गए वादे के अनुसार चीली कोन कोर्स बनाने के लिए काली मिर्च लाने के लिए मैं सुपरमार्केट जा रहा था। उनकी स्कूल की छुट्टियां पड़ने का जश्न मना रहे थे। मुझे हमेशा से ऐसा लगता है कि ऐसा करते हुए वो मेरे बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचते हैं । उनकी छुट्टी के समय मेरे काम बढ़ जाते थे। अगर जश्न मनाना हो, तो वो उनकी छुट्टियां खत्म होने का दिन होगा जब उनको स्कूल वापस जाना होगा । नहीं- मैं तो मजाक कर रहा था (क्या मैं मजाक कर रहा था) मुझे नहीं पता कि मैं सच में मजाक कर रहा था। ऐसे मौके पर अपनी जिन्दगी में थोड़ा बहुत दबाव को कैसे सह सकता हूं।

खैर, उद्यान से गुजरते हुए मुझे बच्चों की एक टोली मिली । पता नहीं मैं क्यों उनकी तरफ देखने लगा । सामान्यतः मैं दूसरे लोगों के बच्चों की ओर नहीं देखता हूं पर फिर भी मैंने देखा बहरहाल वहां बहुत सारे बच्चे थे। मैंने देखा विशेषकर एक बच्चा जो मौसम के लिहाज से कुछ ज्यादा ही कपड़े पहने हुए था। उसका चेहरा लाल था। उसकी उम्र लगभग 10 वर्ष होगी पर वह चार्ली की तरह नहीं था। वह अन्यों बच्चों के साथ ही दौड़ रहा था परंतु जल्दी ही वह परेशान दिखने लगा। मैं उसके बारे में व्याकुल हुआ परंतु मैंने कुछ नहीं किया। मुझे क्या करना चाहिए था? खैर, मुझे याद आया कि मेरे पास सुपरमार्केट जाने का कम ही समय बचा है क्योंकि बाद में वहां भी काफी भीड़ हो जाएगी। मुझे लगता है कि मुझे उसके लिए कुछ करना चाहिए था परंतु उस वक्त मैं समझ नहीं पाया कि किस तरह उसकी सहायता कैसे की जा सकती थी। खैर, वह बैठ गया, मानो वह पूरी तरह थक गया हो और उसमें कुछ भी करने की शक्ति नहीं बची हो। कुछ क्षण पश्चात् , एक दूसरे बच्चे ने उसे फिर से दौड़ने के लिए पुकारा । मैं यह देखकर और भी बैचेन हो गया कि बच्चे ने खड़े होकर दौड़ने की कोशिश की और गिर पड़ा। उसने फिर से कोशिश की और फिर गिर गया। वह आधा बैठा हुआ और आधा लेटा हुआ था । अब भी मैंने उसे देखने के अलावा ज्यादा कुछ नहीं किया । मुझे क्या हो गया था?

मैंने अपने आप से कहा कि दुकानों में जाना है, भोजन की तैयारी करनी है और भी कई काम करने हैं,अन्तत: मैं चला गया। अगले दिन दरवाजे पर अखबार पड़ा था। अखबार देखकर मुझे वास्तव में बड़ा आघात लगा। मैं अपराध बोध से ग्रस्त हो गया। मैं प्राय: गलत काम नहीं करता हूं, मुझे लगता है कि मैं एक अच्छा इंसान हूं। उस अखबार में एक रिपोर्ट थी कि पिछले दिन पार्क में खेल रहे एक बच्चे की तबीयत बुरी तरह से खराब हो गई। वह अस्पताल में जीवन और मौत से जूझ रहा था और स्थिति विकट इसलिए हुई क्योंकि उसे अस्पताल लाने में देरी हुई थी। रिपोर्ट में लिखा था कि जब तक कि कोई दूसरा

लड़का उसको अस्पताल लेकर आता तब तक आधे घंटे से भी ज्यादा समय तक उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मेरे मन में कई तरह के ख्याल आए कि दूसरे बच्चे इतने जिम्मेदार क्यों नहीं थे। हालांकि रिपोर्ट में ऐसा कहा गया की बहुत से आने-जाने वालो ने उसको खेलते हुए देखा होगा और बीमार भी देखा होगा परंतु आने जाने वालो ने इस पर कुछ भी नहीं किया जबकि उनको दिखाई दे रहा था कि कुछ गलत हो रहा है। लेख का शीर्षक था "वो क्यों चले गये"?

इस घटना से मैं कुछ दिनों तक काफी आहत रहा परंतु मुझे नहीं पता कि कहाँ जाया जाए और किसको बताया जाए। मैं इससे उबरना चाहता था। मुझे लगता है कि अंततः ये बुरी भावनाएं खत्म हो जाएंगी और भगवान का शुक्र है कि सच में ये खत्म हो गई। अगली बार मैं इस तरह से नहीं चला जाऊंगा- मुझे आशा है!

उद्यान (4)

मैं दूकान वाले रास्ते से गुजरते हुए उद्यान की ओर गया | वँहा बच्चे खेल रहे थे | मुझे लगा कि मैं उनमें से कुछ बच्चों को जानता हूँ |उनमें बच्चों की एक टोली थी जो आदतन शरारती थे और अपने से छोटे और कमज़ोर बच्चों पर रोब झाड़ते थे | उन्होंने हाल ही में मेरे बच्चे के साथ भी शैतानी की थी | मैं रुक गया और उनकी तरफ देखने लगा | मुझे लगा कि जैसे वो मुझे पहचानेंगे तो थोड़े नर्वस हो जाएंगे | मेरा इरादा था कि मैं उनको धमकाऊंगा | मुझे लगता हैं कि वो इस बात को जान गए थे और इस बात से उहापोह में थे |

वो उछलकूद करते फिर रहे थे | सूर्य देवता आग बरसा रहे थे | वहाँ एक लड़का था जो चार्ली से उम्र में थोडा ही कम था | दूसरे लडको की तुलना में आधिक उदास और नर्वस लग रहा था जैसे कि मुझे लगा कि मुसीबत की जड़ शायद वही था | वो बच्चे उसे वही छोडकर चले गए | इससे मुझे लगा की वो नाटक कर रहा है और चाहता है कि मैं उस पर रहम खाऊ, परन्तु मैने कोई रहम नहीं दिखाया |अंत में दूसरे बच्चों ने उस को पुकारा और वह धीरे- धीरे खड़ा हुआ ऐसे जैसे की नाटक कर रहा हो और फिर से गिर पड़ा | मैं इससे तंग आ गया और फिर अपनी खरीददारी के लिए चला गया | मुझे बड़ी खीज हो रही थी | भगवान का शुक्र है कि मेरे बच्चे की आने वाली पार्टी में वह नहीं था | इतना करने के बावजूद भी वह उन बच्चों की सहानभूति प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाया |

वैसे हाँ – इस कहानी में बताने के लिए और भी बहुत कुछ है | अगले दिन अखबार में लिखा था कि कल पार्क में एक बच्चा बीमार हा गया था और वँहा पर वह कुछ समय के लिए पड़ा रहा और बहुत ही बीमार हो गया | उसमें यह भी लिखा था कि वँहा से कई लोग गुजरे और उन्होंने उसे देखा भी परन्तु उसके लिए कुछ भी नहीं किया | अखबार का शीर्षक था " वो क्यों चले गए ", शीर्षक बहुत ही बकवास था |

मैं भला क्या कर सकता था मुझे लगा वहाँ पर स्थिति अलग थी वह अस्पताल में भी झूठ मूठ का नाटक कर रहा होगा या फिर अखबार वालो के पास खबरों की कमी रही होगी वो इसे बढ़ा-चढ़ा के पेश कर रहे होंगे | यह भी हो सकता है वह ग्राऊंड पर सो गया होगा और उसे ठण्ड लग गई होगी और दूसरे बच्चे

उससे घबरा गए होंगे और यह भी हो सकता है कि उसने अस्पताल में ही नाटक का मानस बनाया हो | मैं समझ नहीं पा रहा था की वह किस परिवार से आया है |

इस घटना के अगले दिन तक मैं ठीक वैसे ही सोचता था | मैने इसे अपनी पत्रिका में भी लिखा परन्तु मैं इस घटना से थोडा बहुत त्रस्त भी अवश्य था | अगले कुछ दिनों तक मेरे मन में बार-बार यही घटना घूमती रही और मैं इस पर अलग तरह से सोचता रहा। हो सकता है कि जब मैने उसे देखा तक वो सच में ही बीमार हो यह भी हो सकता है कि उन बच्चों की शरारतो की वजह से हमारे जैसे माता-पिता नाराज हो जाते है और मै भी उसे इसी दृष्टि से देख रहा था। इस तरह से सोचने से लगा कि मुझे वैसा नहीं करना चाहिए था भले ही वो शरारती हो परन्तु फिलहाल वह बीमार है और यह हो सकता था कि वो मेरे पास इसलिए आया था कि मै उसकी कुछ सहायता कर संकू।

भले ही मुझे उस स्थिति की सत्यता का पता न हो परन्तु मैने उस स्थिति के बारे में बाद में जैसा सोचा उससे मेरी प्रतिक्रिया अलग होती। मैं गैर जिम्मेदार की भावना से उतना त्रस्त नही होता जितना कि मैं आज त्रस्त हू। मुझे आशा है कि अन्य बच्चों के माता-पिता मेरे बच्चों की क्रियाओं का गलत मतलब नहीं निकालते होंगे और मैं उन बच्चों की क्रियाओं को समझ सकूंगा |

इससे मेरा चीजों को देखने का नजरिया बदला। उस समय मेरा नजरिया उस घटना के लिए अलग था आज मैं अलग तरह से उस घटना को देखता हूँ । यह कहानी अखबारों में कुछ दिनों तक छपती रही क्योंकि लडका बहुत बीमार था और लगभग मौत के साये में था और अखबार में उन लोगो को केन्द्र बिन्दू बना कर लिखा जा रहा था जो किसी घटना के समय मूक दर्शक बन कर खडे रहते है और कोई कार्यवाही नही करते है।

उस वक्त के बारे में सोचते हुये शरारती बच्चो की बात इसलिए आयी क्योंकि हम नाश्ते के समय इसकी चर्चा कर रहे थे। वास्तव में यह चर्चा उस घटना के थोडी देर पहले ही हुई थी और उस चर्चा से मुझे गुस्सा आया और मेरा मन बडा खिन्न हो गया था और मुझे पार्क में खेलने वाले सभी बच्चे शरारती लगने लगे भले ही वो शरारती न हो। परन्तु फिर भी मेरे मन में उस समय यही सब घूम रहा था। इसलिए मुझे लगता है कि मैने अपनी भावनात्मक आवरण और वस्तुस्थिति से उपजी मनोदशाओं के वशीभूत हो कर घटनाओं की व्याख्या की। यदि नाश्ते के समय वैसी वार्तलापन ही हो तो उस घटना के प्रति मेरी प्रतिक्रिया कुछ अलग हो सकती थी। इस पूरी घटना का महत्व इतना प्रभावकारी है कि मुझे अहसास होता है कि अगर मैं कुछ नही करता तो वह मर भी सकता है लेकिन मैं इस बारे में अलग तरह से कैसे सोच सकता हूँ जबकि मैं अपनी भावनाओं के जंजाल में पूरी तरह जकडा हुआ था। मैं ऐसी क्या युक्ति अपनाता जिससे की घटनाओं को देखने के प्रति मेरा नजरिया बदल जाता। मुझे ऐसा कैसे पता चले कि कुछ घटनाएं मुझे अनुचित रूप से प्रभावित न करें।

उद्यान:- चिंतन की गुणवत्ता पर टिप्पणीयां

उद्यान 1

- यह खण्ड एक कहानी मात्र है। कभी यह पुर्वानुभवों का उल्लेख करता है तो कभी-कभी भविष्य की कल्पना करता है। लेकिन ये सभी कहानी के संदर्भ से ही जुड़े हुए है।

- इसमें भावनात्मक स्थिति से जुड़े संदर्भों का उल्लेख भले ही है , परन्तु भावनाएँ कैसे उमड़ती है इसकी विस्तार से चर्चा नहीं की गई है।
- दूसरे लोगों के विचारों को अभिव्यक्त किया गया है परन्तु न तो इनकी व्याख्या की गई है अथवा घटनाओं के पीछे छुपे हुए कारणों का पता लगाने की कोशिश की गई है।
- कहानी में लेखक के सिर्फ एक ही दृष्टीकोण को दर्शाया गया है।
- सामान्य विचारों की तारत्मयता दिख रही है और ये केवल कहानी से जुड़े है। ये सभी प्रासंगिक अथवा केद्रित नहीं है।
- वास्तव में इसमें चिंतन जैसा कुछ नहीं है यह बहुत वर्णानात्मक है। यह एक घटना को आधार बनाकर लिखी गई है। जिससे चितंनशीलता पैदा हो सके। हलाकि इसके अंतिम दो शब्दों के अलावा चिंतन करने की कोई विषयवस्तु नहीं है।

उद्यान 2

- इस कहानी में एक सी घटनाओं को ही विस्तार से बताया गया है। घटना से जुड़े बहुत कम विचार व्यक्त किये गये है । दूसरे लोगों के नजरिए और टिप्पणियों से संबंधित ही विचारों को लिया गया है।
- हालांकि यह कहानी से भी बढ़कर है यह उस घटना से इतना ज्यादा जुड़ा हुआ है। जैसे किसी बड़े प्रश्न का उठाया गया हो और उसका जवाब दिया गया हो।
- इन प्रश्नों के व्यवहार के उद्धेश्यों का पता लगाने की काबिलियत है परन्तु इसका असर ज्यादा नहीं होता है। दूसरे शब्दों प्रश्न पूछने से यह विवरणात्मक आलेख की तुलना में कही बेहतर बना परन्तु इन प्रश्नों के उत्तर देने के प्रयासों में कभी होने के कारण घटनाओं का वास्तविक विश्लेषण बहुत कम हो पाया।
- लेखक अपने कार्यों और प्रश्नों के समालोचक है यह संकेत मिलता है। घटना पर प्रश्न उठाने का अर्थ है कि लेखक घटना से कुछ हद तक जुड़ा है। लेखक का मानना है कि यह एक महत्वपूर्ण घटना है और इससे कुछ सीखा जाना चाहिए परन्तु उसका चिंतन उतनी गहराई तक नहीं पहुंचा कि इससे कुछ सीखा जा सकें।

उद्यान 3

- कहानी सारगर्भित है- मुद्दों को उठाने के लिए पर्याप्त है। असंबद्ध जानकारी नहीं दी गई है। यह कहानी मात्र नहीं है। इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया गया है कि घटना पर चितंन हो और उसके कुछ सीखा भी जा सके। इससे यह भाव झलकता है। लेखक अपने लेखन में बेहतर चितंन दर्शाने और प्रभावी समालोचना के लिए घटना से जुड़ा है।
- स्थिति का विश्लेषण पर्याप्त रूप से किया गया है और स्पष्ट रूप से बताया गया है। यह कोई साधारण घटना नहीं थी जिसका बार-बार स्पष्टीकरण दिया जाए या ऐसी घटनाए जिनका समान रूप से प्रभावपूर्वक उल्लेख कर के उन्हे महत्वपूर्ण बनाया जाए।
- कहानी का विस्तार तुलनात्मक रूप से कम है। (पार्क 4 में देखें) क्योंकि लेखक यह स्वीकार नहीं करता कि स्थिति पर चिंतन करने के दूसरे रास्ते भी हो सकते है। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि

लेखक का चितंन उसके द्वारा दिए गये संदर्भो से प्रभावित है। यह संभव है, उदाहरण के लिए अंतिम अनुछेद में चार्ली के साथ उसके अनुभव की बात हो या उसके लड़के को जानने से उसके हावभाव या सोच में अंतर आ सकता था। यह सिर्फ घटनाओं को जोड़कर दिखाने का मामला नहीं है । बल्कि उस संभवना का पता लगाना भी है जिससे लेखक के पुराने अनुभवों से घटनाओ का प्रस्तुत करने का नजरिया प्रभावित हो सकता था।

उद्यान4

- लेख संक्षिप्त एवं बिंदुवार है। यहाँ कुल प्रतिदर्श है जो मूल्यों व विश्वासों पर आधारित
- आत्म-आलोचना वह प्रश्न है जिस पर व्यवहार आधारित था।
- संदर्भ संबंधित जनकार्यवाही के रूप में ऐनी के सद्व्यवहार का घटना से पीछे आने का साक्षय है।
- आंतरिक संवाद भी है – उसके स्वयं से वार्तालाप जिसमें वह वैकल्पिक स्पष्टीकरण पर अग्रीम प्रतिदर्श एवं प्रस्तुत करती है।
- वह इससे अधिगम एवं वेकल्पिक दृष्टिकोण ध्यानाकर्षण के एवं अन्य के नजरिये (टॉम) पर देखने के साक्ष्य दर्शाती है।
- वह उसके प्रतिदर्श पर गंद्याश के समय का प्रभाव का लक्षण पहचानती (दर्शाती) है। उदाहरण के तौर पर कि उस वक्त पर उसके व्यक्तिगत दृष्टिकोण उसके कार्यो को प्रभावित कर सकता है एवं जो संदर्भ का भिन्न दृष्टिकोण भिन्न परिणाम को दर्शाता है। वह ध्यान देती है कि अन्य की संभावना, संभावित असंबंधित घटनाओं (रात्रि – भोज वार्तालाप) या तो उसके वास्तविक व्यवहार पर एवं परवर्ती प्रतिदर्श पर संभावित या केवल उसके प्रतिदर्श प्रक्रिया पर संभावित प्रभाव रखता है। वह ध्यान देती है और पुरानी घटनाओं की याद में (सिंहावलोकन) घटना की पुन: संरचना करती है । इस के इर्द-गिर्द कहानी बनाती है जो सत्य ही नही है।
- वह पहचानती है कि इस परिस्थति के लिए कोई निष्कर्ष नही हो सकता – लेकिन यह कि इससे बहुत कुछ सीखने के लिए अभी भी है।वह उसके अपने प्रतिदर्श की प्रक्रिया पर प्रतिदर्श करने में भी सक्षम हो चुकी है। वह पहचानती है कि उसकी प्रक्रिया से परिणाम प्रभावित हुआ ।

प्रतिदेश लेखन अभ्यास

- आप प्रतिदर्श लेखन के उद्देश्य के प्रति जागरूक रहें एवं बताए यदि यह उपयुक्त है।
- प्रतिदर्श लेखन हेतु अभ्यास की जरूरत होती है एवं स्वयं को निरंतर सोचते रहना चाहिए।
- भिन्न भिन्न लोगों के नजरिये एवं अनुशासन द्वारा समान घटना / क्षण पर प्रतिदर्श लेखन का अभ्यास
- करते रहना चाहिये।

- समूहो एवं व्यक्तियों से चर्चा करनी चाहिये विभिन्न विभिन्न मुद्दों पर | दूसरों की सहायता से आपकी प्रतिदर्श / परिवर्तित लेखन में गहराई आती है | अत: दूसरों के बिन्दुओं और दृष्टिकोण को भी समझना आवश्यक है।
- हमेशा प्रतिदर्श करें कि किसी घटना से आपने क्या सीखा है, एवं कैसे आप दूसरे समय पर आप किस प्रकार से कुछ अलग कर सकेंगे।
- अपने प्रतिदर्श लेखन विकास में नीति शास्त्र सम्बन्धित नैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक परिपेक्ष्य को अवश्य शामिल करने का प्रयत्न करें, जहाँ भी यह शामिल किए जा सकते हैं ।

इकाई - 4

विभिन्न प्रकार के पाठों की सूची

इस पाठ्यक्रम में प्रतिबिम्बन हेतु दस प्रकार के पाठों को लिया गया है | जिनकी सूची (परिभाषा एवं उदहारण सहित) नीचे दी गई है | दी गई सूची में से किसी एक प्रकार के पाठ का चयन छात्र करेगा | इकाई 5 में दिए गए दिशा-निर्देश के अनुसार वह एक फाइल बनाएगा | जिसमें उस दिए गए पाठ का अंश संलग्न करना होगा और उसके बाद वह उसका प्रतिबिम्बन करना होगा |

1. **Empirical Text/ अनुभवजन्य पाठ-**

   इसमें ऐसे पाठ लिए जाएगें जोकि अवलोकन या परीक्षण पर आधारित हैं | इनको अवलोकन अथवा परीक्षण के माध्यम से साबित किया जा सकता है या जोकि व्यावहरिक अनुभव से निर्देशित है, सिद्धांत से नहीं | इस तरह के पाठ में दैनिक जीवन से संबंधित तथ्य अनुभव हो सकते हैं | उदाहरण के लिए-विद्यालय से संबंधित, गाँव से संबंधित, बाजार से संबंधित या अन्य कोई इस प्रकार का अनुभव |

2. **Conceptual Text/ वैचारिक पाठ-**

   इसका अर्थ ऐसे पाठों से है जो कि संकल्पना या विचार पर आधारित हो | पढ़ने के दौरान हम पाते हैं कि बहुत से अलग-अलग तरह के पाठ जिनका लगभग एक समान संकल्पित अर्थ होता है| इनको हम उदाहरण के माध्यम से समझने का प्रयास करते है | आपको इनमे ऐसे ही पाठों का चयन करना है जो कि संकल्पना पर आधारित हो | इस पाठ के अंतर्गत विद्यार्थी किसी विषय पर विस्तार से विचार करते हुए उसके मूल विषय को स्पष्ट करेंगे | अन्यथा किसी विषय पर एक अनुच्छेद भी दिया जा सकता है | इस अनुच्छेद को विस्तार देते हुए उसकी मूल विषय वस्तु को स्पष्ट किया जा सकता है | यह विचारात्मक पाठ राष्ट्र,समाज,धर्म या ऐसे ही किसी अन्य विषयवस्तु से संबंधित हो सकते हैं | उदाहरण- किसी एक कहानी का चयन/ फिल्म का चयन / किसी रचना का चयन/उस रचना की विषय वस्तु का स्पष्टीकरण http://www.abhivyaktihindi.org/upanyas/lautana/lautana01.htm पर उपलब्ध उपन्यास को पढ़कर उसके विचार को अभिव्यक्त करना |

   पोसनर एटअल(1982) द्वारा इन्हें आवश्यकताओं के रूप में परिभाषित किया गया है -

   1. असंतोष छात्रों और वैज्ञानिकों के लिए उनके मौजूदा अवधारणाऐ उपयोगी साबित हो क्योंकि उनके संज्ञानात्मक संरचनाओं को बदलने की जरूरत नहीं है। इसलिए वैचारिक परिवर्तन का एहसास करने के क्रम में, अनसुलझे समस्याओं में मौजूदा अवधारणाओं का होना चाहिए। इस रास्ते में, व्यक्ति के मन की उसकी / उसके वर्तमान

स्थिति से परेशान किया जाना चाहिए, और उसे बदलने की जरूरत महसूस करना चाहिए।

2. बोधगम्यता: नई अवधारणा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिन्हें छात्र समझ सकें कि क्या कहा गया है जिसे कि अन्य अवधारणाओं के साथ प्रासंगिक होना चाहिए। सादृश्य, टेबल, वेन आरेख, इसे रूपकों और समझ के लिए इस्तेमाल किया जा सकता हैं।
3. दिखावट: नए ज्ञान, उचित स्वीकार्य, प्रशंसनीय और सुसंगत होने चाहिए जो छात्र के पूर्व ज्ञान के साथ फिट होंगें। नई अवधारणा को समस्या के समाधान में उपयोगी साबित करना होगा।
4. परिपूर्णता: नई अवधारणाओं का सामना समस्या के समाधान में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, और इसमें नए शोध और खोजों के लिए छात्रों को आकर्षित करने की क्षमता होनी चाहिए।

Kenneth Goldsmith के अनुसार ...I will refer to the kind of writing in which I am involved as conceptual writing. In conceptual writing the idea or concept is the most important aspect of the work. When an author uses a conceptual form of writing, it means that all of the planning and decisions are made beforehand and the execution is a perfunctory affair. The idea becomes a machine that makes the text. This kind of writing is not theoretical or illustrative of theories; it is intuitive, it is involved with all types of mental processes and it is purposeless. It is usually free from the dependence on the skill of the writer as a craftsman. It is the objective of the author who is concerned with conceptual writing to make her work mentally interesting to the reader, and therefore usually she would want it to become emotionally dry. There is no reason to suppose, however, that the conceptual writer is out to bore the reader. It is only the expectation of an emotional kick, to which one conditioned to Romantic literature is accustomed, that would deter the reader from perceiving this writing.

3. **Historical Text/ ऐतिहासिक पाठ-**

ऐतिहासिकसाहित्य से अर्थ ऐसे पाठों से है जिसमे किसी समय विशेष की परिस्थितियों, रवैया, दृष्टीकोण और मूड अस्तित्व में था | इसमें इतिहास से संबंधित अथवा इस तरह के साहित्य आएगें जो कि किसी प्राचीन समय से संबंध रखते हों |अद्भुत घटना जो कि समय के साथ परिवर्तित हों गई हो | अथवा ऐसी सहोटी जिसका इतिहास में अच्छा खासा महत्व हो | इस

तरह के पाठ में समय , काल परिस्थितियों का वर्णन होता है| इस तरह के पाठो का समय केंद्रित वर्णन किया जाना आवश्यक होता है |

4. **Policy document/ पॉलिसी दस्तावेज-**

पॉलिसी दस्तावेजकिसी भी संस्थान के स्तर का दस्तावेज़ होता है, जिसमें उस संस्थान के माननीय व्यवहार और तरीकों के बारे में जानकारी दी गई होती है | पोलिसी का सीधा सा अर्थ होता है कि किसी भी संस्थान में कार्य किस प्रकार किया जाता है या किस प्रकार किया जाना चाहिये | पोलिसी, प्रक्रिया और मानक ओपेराटिंग प्रक्रिया से भिन्न होती है क्योकि वह सम्पूर्ण संस्थान से संबंधित होती है और इसका मुख्य उद्देश्य दिशा निर्धारण का होता है | दूसरी ओर प्रक्रिया और मानक ओपेराटिंग प्रक्रिया में विशिष्ट निर्देश दिए गए होते हैं जिनके द्वारा किसी भी खास कार्य को पूर्ण किया जाता है | अच्छी पोलिसी, सक्रीय आवाज़ और समझने वाली भाषा में लिखी जाती है | उदाहरण के लिए- किसी भी व्यावसायिक वातावरण में पोलिसी दस्तावेज़ के पांच भाग होते हैं – मानव संस्थान / वित्तीय या कानूनन / सुरक्षा/पारिचालन | मानव संसाधन में लोगो से संबंधित और अवकाश, किराये, कर्मचारी से संबंधित मुद्दे आते हैं |

5. **Studies about School/ विद्यालय से संबंधित साहित्य-**

इसमे ऐसे पाठों का चयन करना है जो की विद्यालय से संबंधित हो | उदाहरण- विद्यालय जीवन का वर्णन हो या विद्यालय में कोई विशेष कार्यक्रम शुरू किया हो / मध्यान्ह भोजन या बालिकओं के लिए गार्गी पुरस्कार आदि |

6. **Text concerned with teaching and learning/ शिक्षण और आधिगम से संबंधित पाठ-**

ऐसे पाठ जो कि शिक्षण और अधिगम से संबंधित हो | ऐसी योजनाएँ जो शिक्षक के शिक्षा और छात्र के अधिगम को प्रभावित करती है | जैसे- कक्षा दस में बोर्ड कि वैकल्पिक व्यवस्था या समाविष्ट (inclusive)शिक्षा अथवा विद्यालय में शारीरिक दंड पर रोक एवं लैंगिग या धार्मिक असमानता से संबंधित आदि व अन्य|

7. **Expository text from diverse sources/वर्णनात्मकया व्याख्यात्मक, प्रतिपादन-विषयक पाठ विविध स्त्रोतों के द्वारा**–

अर्थप्रकाशक पाठ लिखने का उद्देश्य पाठक को सूचना देने से है | ऐसे पाठ तथ्य आधारित होते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सच जोकि विश्वसनीय स्त्रोत से पाया गया हों, से अवगत करना होता है | अर्थप्रकाशक पाठ, सच और जानबूझकर आपने पाठक को शिक्षित करता है | साफ़, संक्षिप्त और व्यवस्थित लेखन, इसकी पहचान होती है | यह मुद्दे पर आसानी से और अच्छे से समझ आते हैं |यह सूचना आधारित पाठ होते हैं | इसके उदाहरण हैं- पाठ्य-पुस्तकें, समाचार लेख, निर्देश देने वाली पुस्तिका , भाषा-पुस्तकें आदि |

8. **Autobiographical text/ आत्मकथात्मक पाठ-**

जब लेखक अपने आस पास के विभिन्न प्रकार के सच्चे लोग, स्थान और घटनाओं के बारे में लिखता है, उसे गैर-कल्प (Non-fiction)कहा जाता है | इसमें इस प्रकार की सूचना आती है जो सत्य होती हैं | इसका सबसे अच्छा उदाहरण आत्मकथात्मक पाठ होते हैं | इसका अर्थ है ऐसी कहानी, जो उस व्यक्ति की है जो उसे बता रहा है | इसका विषय भी उसका लेखक ही होता है | पत्रिका (स्वं के अनुभव और अवलोकन जो प्रतिदिन लिखे जाते हैं और जिनका हम अभिलेख करते हैं, इनमें संवेदना नहीं होती है), डायरी (प्रतिदिन लिखे जाने वाले वह अभिलेख जिनमें व्यक्ति स्वं के विचार और अनुभूतियों का वर्णन, इनमें संवेदना होती है) ,पत्र (जो किसी विशेष व्यक्ति अथवा संस्थान के लिए लिखे जाते हैं), संस्मरण (किसी विशेष घटना या व्यक्तियों के लिए लिखी होती है, जिसमे लेखक के स्वं के अनुभव शामिल होते हैं) इसके उदाहरण हैं |

9. **Field notes/ फ़ील्ड नोट्स-**

फ़ील्ड नोट्ससे अर्थ है ऐसे विभिन्न प्रकार के नोट्स जो शोध वैज्ञानिकों द्वारा उसी समय या किसी विशेष घटना का अवलोकन करते समय लिखे जाते हैं | यह अधिकतर वर्णनात्मक विज्ञान में प्रयोग किए जाते हैं जैसे-जीव विज्ञान, नृवंशविज्ञान, भूविज्ञान, समाजिक विज्ञान, शिक्षा शास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि |

10. **Ethnographic texts/ नृवंशविज्ञानग्रंथ-**

नृवंशविज्ञान ग्रंथ,एक ऐसे प्रकार के ग्रन्थ हैं जिसका मुख्य उद्देश्य किसी संस्कृति और समूह को अनोखे दृष्टिकोण से समझना है | इसका शाब्दिक अर्थ है- लोगों के समूह के बारे में लेखन | इस की प्रकृति सम्पूर्ण दृष्टिकोण है | जिसमें किसी संस्कृति के इतिहास को अच्छे से पढ़ा जाता है और उनके वातावरण के बारे में चर्चा की जाती है

****

इकाई - 5

छात्रों के लिए दिशा-निर्देश

जैसा कि हम सब जानते हैं कि पुस्तकों का प्रतिबिम्बन छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए ही आवश्यक है | छात्र-अध्यापक की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम अपने छात्रों को जीवन पर्यन्त पाठक बनने के लिए उत्साहित करते रहे, परन्तु हम स्वयं के अंदर ही इस आदत का विकास नहीं कर पाते | इस पाठ्यक्रम की मदद से हम इसका विकास कर सकते हैं | प्रत्येक दिन हम विभिन्न प्रकार के पाठों/ साहित्यों कों पढ़ते हैं | इन्ही पाठों का पठन , मनन, चिंतन एवम लेखन पर हम इस पुस्तक में बात करेंगे | इस सामग्री/पुस्तिका/manual को आपके प्रयोग हेतु नियत किया गया है | इसलिए आपको लेखन हेतु स्वतंत्र महसूस करना चाहिये एवं जैसा आपको उचित लगे इसका प्रयोग करें | यह सामग्री परवर्ती अनुसंधान हेतु पूर्ण एवं संदर्भ सामग्री के अभ्यास, सूचना पृष्ठभूमि दोनों उपलब्ध करता है |

उद्देश्य - इस इकाई में आपको यह बताया जाएगा कि इस पेपर में आपको क्या और कैसे करना है | इस पेपर के लिए जो फाइल तैयार की जाएगी उसकी रूपरेखा कैसी होगी | यह manual छात्र अध्यापकों (pupil teacher) के लिए तैयार किया गया है | यह कुल 50 अंक का है, जिसके लिए फाइल आपको तैयार करनी होगी (इस फाइल को बनाने के लिए निर्देश आगे के पृष्ठ में दिए गए हैं) | इस पाठ्यक्रम में 10 प्रकार के पाठ दिए गए हैं जिनकी विस्तृत जानकारी इस पुस्तक में पिछली इकाईयों में पढ़ चुके हैं | दिए गए पाठों की सूची (पिछली इकाई 4 में) से आपको किन्ही दो प्रकार के पाठों का चयन करके उनके बारे में प्रतिदर्श व्यक्त/ विचारमग्न कर लिखने होंगे | प्रतिदर्शन के बारे में विस्तार से पिछली इकाई- 3 में बताया जा चुका है | उन सभी बिन्दुओ को ध्यान में रखकर आपको अपना कार्य करना है | प्रत्येक पाठ का प्रतिदर्शन 25 अंक का है |

इस कार्यक्रम में, आपको कम से कम दो प्रकार के पाठों का चयन करना है और लगभग 1500 शब्दों में प्रत्येक की प्रतिबिम्बन रिपोर्ट लिखकर प्रस्तुत करनी है | यह कुल श्रेयांक 3 का है |

- आपको आपनी पसंद की किसी भी पुस्तक का चुनाव करना है |उसके लेखक, शीर्षक, प्रकाशन, प्रकाशन का साल आदि की जानकारी देनी है |
- आप किस कक्षा को पढ़ाते हैं, अध्यापन का क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी/तहसील/ अन्य) आदि जानकारी उसमे देनी है |
- आपने जिस पुस्तक का चुनाव किया है, उसके जिस भाग या अंश का आप प्रतिबिम्बन करेंगे , उसकी छायाप्रति रिपोर्ट के साथ ही जमा करना है | आपने उसका चुनाव किस कारण से किया है, वह भी साथ में लिखे | आप उस पुस्तक के बारे में और अधिक यादि कोई जानकारी देना चाहते हैं, तो उसका भी वर्णन करें |
- पुस्तक का गहनता से पठन / अध्ययन कीजिये |

- जिस अंश का प्रतिबिम्बन किया जाना है उसकी पंक्तियों को अपने भीतर के भावों सहित (Read between the lines) पढिए।
- जो विचार आपके भीतर बने, उसी के अनुरूप ,उस अंश का प्रतिबिम्बन लिखिये |(प्रतिबिम्बन की पूर्ण प्रक्रिया, उद्देश्य सहित पिछली इकाई 3 में आपको समझाया जा चूका है)
- फाइल को पूरा करके आप संपर्क शिविर के दौरान अपने सम्बंधित क्षेत्रीय केंद्र पर अवश्य जमा करेंगे |
- वाक्यांशों की भाषा, भाव, संप्रत्यय एवं विचारों पर अपनी धारणा स्पष्ट करें।
- प्रतिबिंबन को अपनी स्वयं की भाषा (Hindi/English) में लिखें।
- इसे जमा न करने की स्थिति में आपका प्रायोगिक कार्य अपूर्ण माना जायेगा और आपका परीक्षा परिणाम रोक दिया जायेगा ||
- प्रोजेक्ट रिपोर्ट के प्रथम पृष्ठ पर आप अपना नाम, अपना स्कॉलर नंबर, अपना क्षेत्रीय केंद्र एवं अपने अध्ययन केंद्र का नाम लिखे |
- आपकी रिपोर्ट हस्तलिपि में होनी चाहिये |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (References)

- Bloom, B, 1964, *Taxonomy of Educational Objectives : Handbook 1: Cognitive Domain.*
- Longman.
- Gibbs, G, 1988, *Learning by Doing. A Guide to Teaching and Learning Methods*. FEU
- Hatton,N. Smith,D. (1995) *Reflection in teacher Education.* Teaching and Teacher Education. Vol 11 p33 – 49
- Kolb, D. 1984, *Experiential Learning:* Experience as the Source of Learning and Development, Prentice Hall, New Jersey
- Moon, J, 1999, *Learning Journals: A handbook for academics, students and professional development.* Kogan Page.London
- Moon, J.2001. *The development of assessment criteria for a journal for PGCE students.*
- Unpublished. University of Exeter.
- Nisbett, J and Watt,J *Case Study* in Bell, J, Bush,T, Fox, A, Goodey, J and Goulding, S,
- 1984 *Conducting Small-scale Investigations in Educational Management*. Chapman
- Rowling,J.K (2000) *Goblet of Fire* . London Bloomsbury.

Bibliography

- Adair, J. 1997, *Decision Making and Problem Solving,* Training Extras, IPD Books
- Adair, J. 1997, *Leadership Skills,* Training Extras, IPD Books
- Assiter, Alison (Ed). 1995, *Transferable Skills in Higher Education*
- Bee, F and R. 1995, *Customer Care Training Extras,* IPD Books
- Bertcher, H, 1994, *Group Participation: Techniques for Leaders and Members.* Sage Bolton, B, 1986, *People Skills*. Touchstone

- Boud, D, Keogh, R, Walker D, 1985, *Turning Experience into Learning.* Kogan Page.London
- Brennan, J and Little, B, 1996, *A Review of Work Based Learning in Higher Education.*
- Quality Support Centre (Open University)
- Brennan, J and McGeever, P. 1987, *CNAA Graduates: their Employment and their Experiences after College*
- Collings, J and Watton, P, March 2000*, JEWELS Project: Learning through Independent*
- *Work Experience - Final Report.* JEWELS/D*f*EE
- *Curriculum Framework:Two-Year B.Ed. Programme;NCTE 2009*
- Dalin, P, 1983, *Learning from Work and Community Experience:* NFER-Nelson
- D*f*EE. 1998, *Graduate Skills and Small Businesses*, Higher Education Employer Division
- Duckinfield, M, Stirner, P, 1992, *Higher Education Developments - Learning Through*
- *Work. Employment Department Group*
- Eraut. 1994, *Developing Professional Knowledge and Competence*
- Gibbs, G. Rust, C. Jenkins, A. Jaques, D. 1994, *Developing Students' Transferable*
- *Skills.* Oxford Centre for Staff Development.
- Handy, C. 1995, *Beyond Certainty - The Changing Worlds of Organisations,* Hutchinson
- Hardingham, A. 1995, *Working in Teams,* Training Extras IPD Books
- Harvey,L. Geall,V. Moon.S 1998, *Work Experience: Expanding Opportunities for Undergraduates,* Centre for Research into Quality
- Hawkins, P, 1995, *Skills for Graduate Recruiters in the 21st Century.* Association of Graduate Recruiters.
- Hayes, J,1991, *Interpersonal Skills.* Harper Collins

- HMSO. 1986, *Working Together*, DE/DES London
- Jamieson, Ian (Ed). *The Journal of Education and Work*. University of Bath
- Jones, Sue. 1996, *Developing a Learning Culture, Empowering People to Deliver*
- *Quality, Innovation and Long-term Success,* Magraw-Hill
- Kemp, I. Seagraves, L. 1995, *Transferable Skills - Can Higher Education Deliver*?
- Studies in Higher Education Volume 20, No 3
- Kolb, D. 1984, *Experiential Learning: Experience as the Source of Learning and Development,* Prentice Hall, New Jersey
- Loughran, J, 1994, *Developing Reflective Practice; Learning about Teaching and Learning through Modelling.*
- MacArthur, J. 1991, *Learning to Learn in a Work Situation,* Executive Development Volume 4, No 4
- Mackay, I, 1993 *40 Checklists for Human Resource Management*
- Maitland, I. 1995, *Managing Your Time,* Training Extras IPD Books
- Mansell, P, 1996, *Making the Most of Meetings.* Framework Press
- Megginson, D. Whitaker, V. 1996, *Cultivating Self Development Training Essentials,*IPD Books
- Moon, J, 1999, *Learning Journals: A Handbook for Academics, Students and Professional Development.* Kogan Page
- Mumford, A. Pedlar M (Ed). Boydell, T (Ed). 1998, *Learning to Learn and Managing*
- *Self Development in Applying Self Development in Organisations*, Prentice Hall
- NCERT. (2005). *National curriculum framework*. NCERT.
- National Advisory Group for Continuing Education and Lifelong Learning, 1997,
- *Learning for the Twenty First Century. HMSO*

- National Committee of Inquiry into Higher Education (NCIHE) (1997) *Higher*
- *Education in the Learning Society.* HMSO
- Pedlar, M, Burgoyne, J and Boydell, T, 1994, *A Manager's Guide to Self Development.*
- Employment Department Group
- Prospects Series, 1999, *Focus on Work Experience*. D*f*EE
- Seagraves, L, 1996, *Learning in Smaller Companies - Final Report.* University of Sterling/D*f*EE
- Schon, Donald, A. 1991, *The Reflective Practitioner*

Web Sites

- Reflective Writing www.shef.ac.uk/uni/projects/wrp/rpwrite.html
- JEWELS Project: www.jewels.org.uk
- National Centre for Work Experience - www.ncwe.com

****